हमारी संस्कृति – हमारी धरोहर

बीकानेर, फरवरी 2020

लोक सौरभ

शौर्य के शीर्ष

बाबा खाटूश्याम

आई होली

छत्रपति शिवाजी

लोक सौरभ

की ओर से

सभी पाठकों को

होली

की

शुभकामनाएं

अनुक्रमणिका

हर मन में जगाएं सांस्कृतिक चेतना...

लोक सौरभ

अध्यक्ष
डॉ. बिट्ठल दास मूंधड़ा
भारतीय विद्या मंदिर

सम्पादक
श्री राजीव हर्ष

अपनी बात
सरल सहज समरस संदेश है होली 04

फाग उत्सव
ठाकुरजी सराबोर हैं 08

लोक गीत
आज बिरज में होरी रे रसिया 12

हमारे मास
चटकीले रंग फाल्गुन के 18

लोक संत
हारे के सहारे खाटूश्याम जी 22

लोक प्रेरक
सत्य के प्रकाश महर्षि दयानंद 36

आपणी रसोई
मावे की मीठी कचौड़ी 41

लोक पर्व
होलिका का 'ससुराल' 10

रहीम दास जी कहते हैं...

'वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटन वारे को लगे, ज्यों मेहंदी को रंग।।'

रहीमदास जी कहते हैं, वे लोग धन्य हैं, जिनका शरीर हमेशा सबका उपकार करता है। जिस प्रकार मेहंदी बाँटने वाले के शरीर पर भी उसका रंग लग जाता है, उसी तरह परोपकारी का शरीर भी सुशोभित रहता है।

राष्ट्र पुरुष
शौर्य के शीर्ष 32

सभी फाइल फोटो

प्रकाशकीय एवं सम्पादकीय कार्यालय
भारतीय विद्या मंदिर, रतन बिहाजी जी का मंदिर, बीकानेर

Email
rajivharsh@gmail.com
Website
www.bharatiyavidyamandir.org

राजीव हर्ष

सरल सहज समरस संदेश है होली

होली के दिनों में आप पाएंगे कि मोहल्लों में नुक्कड़ पर बैठे छोटे बड़े हर वय के कुछ लोग, अपने ओहदे, रुतबे, अपनी हैसियत को ताक पर रख आए हैं और यहां डफ बजाते हुए ऊंची आवाज में फाग और धमाल गा रहे हैं।

होली सरलता, सहजता, समरसता, समता , सामूहिकता और सहिष्णुता का संदेश देने वाला पर्व है। होली का आनंद उठाने के लिए करना कुछ नहीं होता, बस ओढ़े हुए आवरण हटा कर सरल बनना होता है, छोटे बड़े के भेद को भूल कर सहज हो जाना होता है। दरवाजों को खोल कर रखना होता है कि कोई आए और रंग दे हमें रंग में। किसी रंग का प्रतिरोध न हो। हर रंग को स्वीकार करना होता है। जब आखिर में सभी रंगों से छुटकारा पाना ही है, तो अभी किसी रंग से परहेज क्यों?

होली के दिनों में आप पाएंगे कि मोहल्लों में नुक्कड़ पर बैठे छोटे बड़े हर वय के कुछ लोग, अपने ओहदे, रुतबे, अपनी हैसियत को ताक पर रख आए हैं और यहां डफ बजाते हुए ऊंची आवाज में फाग और धमाल गा रहे हैं। गाना आता है कि नहीं आता, इससे इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। कोई सुने या न सुने, इससे भी इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इन्हें श्रोताओं से तालियों की अपेक्षा नहीं है। बस गा रहे हैं, अपनी मौज में। इनमें से कुछ सुरीले कंठों वाले हैं तो कुछ गर्दभ कंठी भी, मगर उनका समवेत स्वर पूरे मोहल्ले के वातावरण को मधुर बना रहा है। यह जादू है अपनी मस्ती में होने का, सरलता का, सहजता का, सामूहिकता का।

जो सरल सहज और सहिष्णु नहीं हो सकते, वे होली का आनंद नहीं उठा सकते। उनके लिए होली परेशानियां पैदा करने वाला त्यौहार है। होली का मजा रंगों में, गीतों में या होली के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में नहीं है, होली का

जो सरलता और सहजता होली का आनंद उठाने के लिए जरूरी है वही हमारे जीवन के लिए भी आवश्यक है। हमारी समस्या यह है कि हम सरल और सहज नहीं हो पाते।

मजा सरल और सहज हो जाने में है। सरल और सहज हुए बिना आप गा नहीं सकते, नाच नहीं सकते।

जो सरलता और सहजता होली का आनंद उठाने के लिए जरूरी है वही हमारे जीवन के लिए भी आवश्यक है। हमारी समस्या यह है कि हम सरल और सहज नहीं हो पाते। भाग्यवश या अपने पुरुषार्थ के दम पर इंसान जब कोई किसी मुकाम पर पहुंचता है तो बड़ा आदमी बन जाता है। बड़ा हो कर अपने पद, अपनी प्रतिष्ठा का आवरण ओढ़ लेता है, उसी के प्रभाव में रहता है, फिर वह सरल और सहज कैसे रह सकता है। वह कोई भी कार्य अपने मन के अनुकूल नहीं, पद की गरिमा के अनुकूल करता है। जो लोग किसी मुकाम तक नहीं पहुंच पाए, उनकी अपनी परेशानियां हैं, कुंठाएं हैं। वे 'बड़े आदमी' के बराबर आने के प्रयास में अपनी सरलता और सहजता खो बैठते हैं।

सरलता और सहजता के अभाव तथा आदमी से इतर कुछ और बनने, 'बड़ा' होनेके प्रयासों ने आदमी को तनावग्रस्त कर दिया है। अब वह प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ है।

सरलता और सहजता के अभाव तथा आदमी से इतर कुछ और बनने, 'बड़ा' होनेके प्रयासों ने आदमी को तनावग्रस्त कर दिया है। अब वह प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ है। क्योंकि जहां सरलता है वहां मित्र हैं, हितचिंतक हैं, रिश्तेदार हैं, संबंधी हैं। जहां सरलता का अभाव है वहां मित्र और रिश्तेदार भी प्रतिद्वंद्वी नजर आते हैं। सरलता के अभाव में समाज में तनाव, विषाद, घृणा, द्वेष आदि नकारात्मक भाव ज्यादा प्रभावी हो गए हैं। इसका असर यह है कि समाज में विषमता बढ़ रही है। अपराध बढ़ रहे हैं। परिवार टूट रहे हैं।

रंग पर्व भारत भूभाग पर पैदा होने का एक स्वाभिमान सभी में जगा देता है। यही समरसता का रंग पीढ़ियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हम सबको एकसूत्र में बांधे हुए है।

अध्यात्म और भौतिकता का संतुलित विकास ही समाज में सद्भाव-समरसता को बढ़ावा देता है।

यदि हमें इन परिस्थितियों को बदलना है तो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करना होगा। भारतीय संस्कृति व्यक्ति को प्रकृति के साथ संघर्ष करना नहीं सामंजस्य बिठाना सिखाती है। प्रतिद्वंद्विता के बजाय परस्पर सहयोग की भावना का विकास करती है। भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास को भी जरूरी मानती है।

अध्यात्म और भौतिकता का संतुलित विकास ही समाज में सद्भाव-समरसता को बढ़ावा देता है। हमारी समरसता महान व श्रेष्ठ भारत देश की पहचान है। इसलिए हम एक हैं।

हम अपनी दीपावली, रंग पर्व होली, ईद-बैसाखी और अनगिनत तीज-त्यौहार न केवल भारत में बल्कि हम दुनिया के किसी भी भूभाग में हो, इसे समरसता के साथ मनाते हैं। पश्चिम से हममें आए उत्सव भी हम हमारे अंदाज में मनाते आ रहे हैं। होली का रंग व फाग गीत भी तो इन्हें यही कहता आ रहा है कि हमारा समरस ही अमृत है, जो हमे एकरूपता में रहने की सीख देता है। रंग पर्व दासता और दुश्मनी से परे जाकर एक रस समरस में समाहित होने की ओर ही ले जाता है, जिसमें पूरी दुनिया और उसमें रहने वाले विभिन्न मजहब के लोग समाहित हैं। सिर पर टोपी, हाथ में कड़ा अथवा सिर पर पगड़ी। पहनावे तरह-तरह के। भाषा और बोलियां भी जुदा-जुदा, पर प्रेम और समरसता का रंग एक ही तरह का।

रंग पर्व भारत भूभाग पर पैदा होने का एक स्वाभिमान सभी में जगा देता है। यही समरसता का रंग पीढ़ियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हम सबको एकसूत्र में बांधे हुए है।

होली का त्यौहार हमें हंसते–गाते, मस्ती में झूमते, विविध रंगों से भरे समाज के दर्शन करवाता है। इस समाज में सरलता है, सहजता है, प्रेम है, समर्पण है।

इसलिए आइये समरसता का रंग पर्व होली हम सभी मिलकर मनाएं। पुरखों की इस विरासत का जोरशोर से बखान करें, ताकि दुनिया पर एकाधिकार चाहने वाली आसुरी शक्तियों का समय से पूर्व नाश कर सकें।

होली का त्यौहार हमें हंसते–गाते, मस्ती में झूमते, विविध रंगों से भरे समाज के दर्शन करवाता है। इस समाज में सरलता है, सहजता है, प्रेम है, समर्पण है, श्रद्धा है विश्वास है। ऐसा त्यौहार साल में एक दिन ही क्यों? ऐसी होली हम रोज मनाएं। होली के संकेतों को समझें। सभी तरह के पूर्वाग्रहों, को त्याग कर, अहंकार को हमेशा के लिए त्याग कर सरल और सहज बनें, हर विचार को स्वीकार करते हुए हर विचार का सम्मान करते हुए हर दिन होली खेलें।

ऐसा त्यौहार साल में एक दिन ही क्यों? ऐसी होली हम रोज मनाएं। होली के संकेतों को समझें।

होली की अग्रिम शुभकामनाएं...!

कौशल मूंदड़ा
(लेखक)
राजस्थान

ठाकुरजी सराबोर हैं अबीर-गुलाल से

ठाकुर मदन मोहन लाल अभी बहुत छोटे हैं, मगर उनकी दिनचर्या एक दम व्यवस्थित है। हर काम समय पर करते हैं। सुबह उठना, सखाओं से मिलना, खाना-पीना, गैया चराने जाना, सब कुछ तय समय पर ही करते हैं। ठाकुरजी की यह नियमितता विविधता और विशिष्टता से भरी है। गीत, संगीत, प्रकृति का भरपूर आनंद लेते हैं, बनाव शृंगार करते हैं, माता से रूठते हैं तो दर्शन को तरसती गोपियों से छिपते हैं। ठाकुरजी की दिनचर्या बड़ी ही निराली है, मौसम के अनुसार बदलाव होता रहता है, कभी वे यशोदा के नंदनंदन हैं तो कभी वे तीनों लोकों के स्वामी द्वारकाधीश हैं।

श्रीनाथजी धाम श्रीनाथद्वारा में ठाकुरजी इन दिनों फाग खेलने में मग्न हैं। जी हां, मौसम ही फाल्गुन का है। प्रकृति ने ज्योंही बासंती छटा बिखेरी, त्योंही ठाकुरजी भी रंग-बिरंगे-सतरंगी रंगों से सराबोर होते नजर आते हैं। बसंत पंचमी के दिन से तो ठाकुरजी की हवेली में आनंद ही आनंद बरसता हैं। होली से जुड़े पद सुनाई देते हैं। हर दिन रंग-बिरंगी अबीर-गुलाल तथा चौवा-चंदन से होली खेलते हैं और ठाकुरजी के दर्शन को प्यासे भक्तजन भी प्रसाद रूपी गुलाल से सराबोर होते हैं।

सुबह-सुबह मंगला होती है। यह ठाकुरजी के प्रथम दर्शन हैं। सर्दियों में सूर्य उदय से पहले तथा गर्मियों में सूर्य उदय के बाद यह झांकी खुलती है। पहले शंख नाद होता है, फिर ठाकुरजी को जगाया जाता है। इस दर्शन में बालकृष्ण लाल के मैया यशोदा की गोद में विराजमान होने का भाव है। माता मुकुन्द घुंघराले सुन्दर केशों से आवृत रमणीय कपोल बौर नासिक, अरुण कमल की पंखुडियों जैसे नयनों वाले स्मित (मन्दहास) युक्त मुख - मण्डल के दर्शन कर रही हैं। नन्द बाबा प्रभु को गोद में लेकर लाड़ लड़ा रहे हैं। सखा बाल गोपाल उनके गुणों का गान कर रहे हैं, प्रभु मिश्री और नवनीत का रसास्वादन कर रहे हैं। इस समय किवाड़ आधे खुले रखे जाते हैं जिससे सुबह सवेरे प्रभु खेलने के लिये बाहर न निकल जाएं तथा दर्शन करने वाले भक्तों की भीड़ भी अधिक न आ पाए। सर्दी के समय कोयले की अंगीठी जलाकर निज मन्दिर में रखी जाती है। ठाकुरजी गरम कपड़े गदला आदि ओढ़े रहते हैं। मौजाजी धारण किये होते हैं। इसके विपरीत गर्मी के दिनों में हल्के क्रीम कलर के वस्त्र ही पहने होते हैं। सुबह दर्शन के समय रात को पोढ़ते समय जो वस्त्र पहने होते हैं, उन्हीं से दर्शन करवा दिये जाते हैं। इस समय बन्सी नहीं धराई जाती है। सिर्फ आरती की जाती है।

जागने के कुछ समय उपरांत मंगलभोग पेश किया जाता है। मंगल भोग में ठाकुर सीरा, पूड़ी, दही अचार, अनसकड़ी अरोगते हैं। इसके बाद ठाकुरजी नहाने धोने चल देते हैं। नहाने से पहले ठाकुरजी की मालिश भी होती है। नहाने के बाद नए वस्त्र धारण कराए जाते हैं। वस्त्र धारण करते वक्त उनके पास तबकड़ी (छबड़ी) रखी जाती है। तबकड़ी में कुछ मिठाई, कुछ नमकीन, कुछ मेवे आदि रखे होते हैं। बसंत पंचमी से ठाकुरजी भारी वस्त्र पहनना पसंद नहीं करते। हल्के रंगों के कभी रूई से बने तो कभी दो लड़े वस्त्र धारण करते हैं। सिर पर कभी मुकुट, कभी पाग, कभी फेंटा, दुमाला, टोपी, मल्लिकाट, टिपारा,तो कभी कुलेह धारण करते हैं। फिर हीरा पन्ना जड़े गहनों का शृंगार करते हैं।

भावना यह है कि मैया यशोदा अपने पुत्र का ललित शृंगार कर रही हैं। उबटन लगाकर तथा स्नान कराकर वे श्यामसुन्दर को पीताम्बर धारण करा रही हैं। ब्रज सुन्दरी और भक्त उनके दर्शन कर अपने को धन्य समझ रहे हैं और ठाकुरजी मैया की गोद में विराजमान हैं। कर में वेणू

मौसम तो फाल्गुन का चल रहा है। नंदनंदन कैसे अबीर–गुलाल से दूर रह सकते हैं। उन्हें मीनाकारी के स्वर्णाभूषणों का शृंगार धराया गया है।

और मस्तक पर मयूर पंख है। गले में फूल माला धारण कराई जाती है। मुखियाजी आरसी (दर्पण) बताते हैं, जिससे प्रभु स्वयं देख लें कि उनको अच्छी तरह से कपड़े पहनाये हैं अथवा नहीं। इस समय ठाकुरजी को सूखे मेवे का तथा मिठाई का भोग लगाया जाता है। यह भोग ठाकुरजी के सखा लगाते हैं, इसीलिये इसे गोपीवल्लभ भोग कहते हैं। इसके बाद बंसी धराई जाती है। यह गैया चराने के लिए वन में प्रस्थान करने की तैयारी है।

अब ठाकुरजी ग्वाल बालों के संग गोचारण लीला में प्रवृत्त हैं। माता सीख देती है, 'गहन वन और जलाशय की तरफ भूल के भी न जइयो, सखों से मत उलझियो और लडियो भी मत, कांटेदार भूमि से दूर रहियो, जीवजन्तु वाली भूमि पर कमल सदृश सुन्दर चरणों को मत रखियो और दौड़ती गायों के सामने मत पड़ जइयो।' ठाकुरजी गऊ माताओं को लेकर वन में जा रहे हैं, वेणुवादन से समस्त चराचर जीव मुग्ध हैं, ग्वाल मंडली नृत्य गीत और खेलकूद में तल्लीन है। यह ग्वाल की झांकी है और ठाकुरजी इस समय दही और दुग्ध के पकवान अरोगते हैं।

अब दोपहर का समय हो चला है, मैया यशोदा व्याकुल है कि उसके नंदनंदन को भूख लगी होगी। मैया सरस पकवान और स्निग्ध सुस्वाद खाद्य सामग्री को भिजवा रही है। वे स्वर्ण एवं रजत पात्रों में सजाई जा रही है। मैया गोपियों को सावधान करती हैं, क्या सब सामग्री रखी गई है और क्या वे सब अलग – अलग बर्तन में हैं।

लेकिन, मौसम तो फाल्गुन का चल रहा है। नंदनंदन कैसे अबीर–गुलाल से दूर रह सकते हैं। उन्हें मीनाकारी के स्वर्णाभूषणों का शृंगार धराया गया है जो होली के रंगों के भाव को दर्शाता है, एक कारण यह भी है कि रंग–अबीर से यह आभूषण खराब नहीं होते। यह राजभोग की झांकी है। धवल पिछवई धराई गई है। मुखियाजी अबीर–गुलाल, चौवा–चंदन को चुटकी में भरकर पिछवई पर चिडिया, कमल, सरोवर, वृक्ष, गैया आदि उकेर रहे हैं। ठाकुरजी को रंग–अबीर से लाड़ लड़ा रहे हैं और भक्तगण इस प्रसाद से सराबोर होने को लालायित हैं। तभी मुखियाजी भक्तजनों पर ठाकुरजी के प्रसाद की बरसात करते हैं। हर कोई भक्ति के इन रंगों में भीग जाना चाहता है और जयकारे गूंजने के साथ हर भक्त गुलाल–अबीर से रंगकर धन्य होता है। यह क्रम होली के अगले दिन धुलण्डी तक चलता है।

राजभोग के बाद ठाकुरजी शुभ शयन करने के लिए मध्याह्न में कुन्ज में प्रवेश करते है। छह घड़ी शेष रहने पर (2ः30 से 3ः30 दोपहर) ठाकुरजी को जगाया जाता है। शंखनाद होता है। यही उत्थापन है। 'साहस्त्री भावना' के अनुसार गोपियां कुंजभवन के दरवाजे पर खड़े होकर कहती हैं कि ब्रज में जाने का समय हो गया है। सभी सखा गोपाल बाट जोह रहे हैं और गोवर्धन पर सखियां कन्दमूल और फल इत्यादि से आपकी बाट देख रही हैं। उन सब का मनोरथ पूर्ण करें।

उत्थापन के एक घण्टे के बाद के ठाकुरजी कन्दमूल फल इत्यादि अरोगते हैं। इसमें चार तरह के फल होते हैं, इनमें केला अवश्य होता है। यही भोग की झांकी है। प्रभु वन से घर आने को उत्सुक हैं। माता की आकुलता की चिन्ता कर घर लौटने लगते हैं।

अब सांध्यवेला हो चली है। मैया यशोदा घर की ड्योढ़ी पर नंदनंदन की आतुरता से बाट जोह रही हैं। गोपियां भी छिपी – छिपी एकाग्रता से वेणुवादन सुनने को आतुर हैं। गोधूलि वेला में नंदनंदन अपने बालगोपाल सखाओं के साथ गऊमातों के साथ मंद–मंद मस्तानी चाल से वेणुवादन के साथ प्रवेश करते हैं। गोपियां रस सागर में निमग्न हो जाती हैं। मैया यशोदा के हृदय में वात्सल्य उमड़ पड़ता है और वे ठाकुरजी की संध्या आरती करती हैं। श्रीनाथद्वारा में छत पर बिराजित ध्वजाजी के भोग लगाया जाता है। अन्त में ध्वजाजी को समेटा जाता है। यह भोगआरती की झांकी है।

अब ठाकुरजी के सोने से पहले भोजन का समय हो चुका है। मैया यशोदा अपने पुत्र को शयन भोग करने बुलाती है। इस समय खिचड़ी और हल्के व्यंजन भोग में होते हैं। अरोगने के बाद मैया आरती करती हैं और ठाकुरजी को शयन कराती हैं।

इस प्रकार ठाकुरजी की आठ झांकियां प्रतिदिन होती हैं और विविध प्रकार का भोग अरोगाया जाता है। फाल्गुन में राजभोग की झांकी महत्वपूर्ण होती है जब भक्तजन ठाकुरजी के साथ फाग खेलने को आतुर नजर आते हैं।

कमलेश जड़ोला
(लेखिका)
राजस्थान

मेवाड़ में भी है होलिका का 'ससुराल'

उदयपुर जिले की सबसे ऊंची होली कहते हैं इसे, श्रीफल से तैयार होती है होली

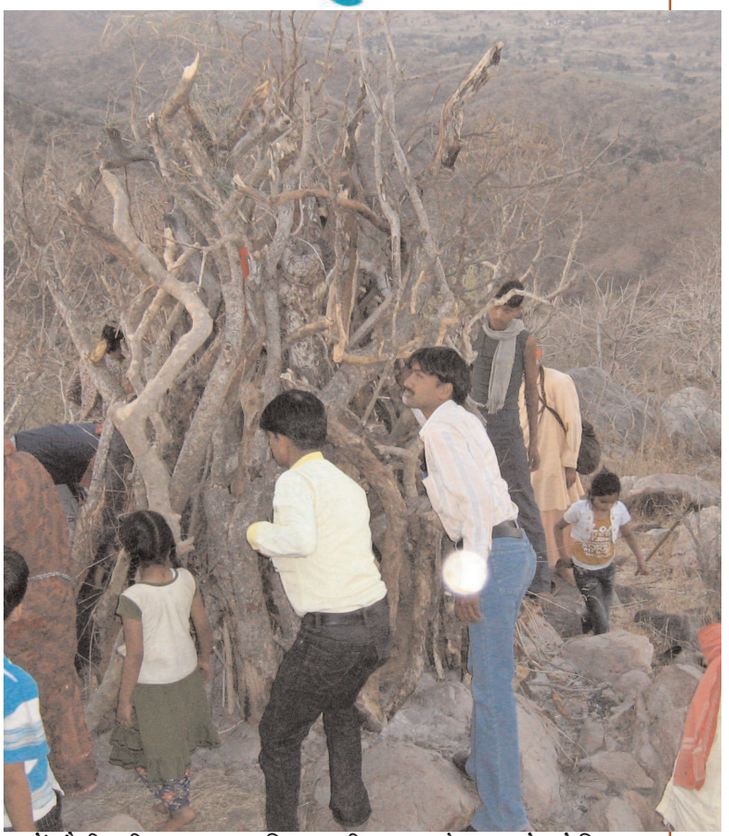

पूरे भारत में होली का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह त्यौहार रंगों के साथ–साथ खुशियां लेकर आता है। राजस्थान के मेवाड़ में होली मनाने की अनूठी परम्पराएं भी देखने को मिलती है। इन्हीं में शामिल है पर्वतों के शिखर पर होलिका दहन की परम्परा। यहां पर्वत शिखर की होली में एक तो सेमारी के करकेला की होली प्रसिद्ध है और दूसरी झाड़ोल के आवरगढ़ की। करकेला को स्थानीय निवासी होलिका का ससुराल कहते हैं तो आवरगढ़ की होली को महाराणा प्रताप की होली की ऐतिहासिकता प्राप्त है। आवरगढ़ पर कमलनाथ महादेव भी विराजित हैं जिनकी कथा रावण की तपस्या से जोड़ी जाती है।

उदयपुर के सेमारी तहसील के धनकावाड़ा ग्राम पंचायत में स्थित डेढ़ किलोमीटर ऊंचे करकेला धाम पहाड़ पर धूणी व लोक स्थानक है। लोक मान्यता है कि हरिण्यकशिपु की बहन होलिका इसी क्षेत्र की रहने वाली थी और जहां आज पहाड़ पर होली जलती है, उसी स्थान पर वह भक्तराज प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठी थी। भगवान विष्णु की माया के चलते होलिका भस्म हो गई और भक्त प्रह्लाद बच गए। हालांकि, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से होलिका का ससुराल यहां नहीं माना जा सकता, लेकिन इस किंवदंती के साथ यहां से काफी दूर उदयपुर जिले के ही जावरमाइंस में एक छोटी पहाड़ी पर प्राचीन किला है और उस पर काफी प्राचीन एक गढ़ है जो अब अवशेषनुमा है। इस गढ़ को हरिण्यकशिपु का गढ़ यानि किंवदंती में होलिका का पीहर माना जाता है।

जो भी हो, बरसों से चली आ रही इस परम्परा के तहत करकेला धाम पर नारियल की होली का दहन किया जा रहा है। लोगो में मान्यता है कि करकेला धाम की होली के दर्शन से दुख–दर्द दूर हो जाते हैं। नारियलों की होली के दहन के दौरान स्थानीय लोग जहां होली की परिक्रमा कर मन्नत मानते हैं, वहीं सलूम्बर, सेमारी, सराड़ा, खेरवाड़ा सहित अन्य जगह के श्रद्धालुगण

सराड़ा व सलूम्बर उपखंड में सबसे पहले होलिका दहन करकेला धाम पर होता है, इसके बाद अन्य गांवों में होली मंगल की जाती है।

करकेला होली के दर्शन कर पूर्णिमा का व्रत खोलते हैं। ऊंचाई पर दहन होती होली दूर–दूर तक दिखाई देती है।

करीब डेढ़ किलोमीटर ऊंचाई पर आसपास के बारह गांवों के लोग ढोल व कुण्डी के साथ लय जमाते हैं और ताल पर युवा, बुजुर्ग हाथों में लाठियां, तलवारों के साथ गेर नृत्य करते हैं और युवतियां लेजिम पर ताल मिलाती हैं और नृत्य करती हैं। सराड़ा व सलूम्बर उपखंड में सबसे पहले होलिका दहन करकेला धाम पर होता है, इसके बाद अन्य गांवों में होली मंगल की जाती है।

अब चलते हैं उदयपुर जिले के झाड़ोल स्थित आवरगढ़ पर। ऐतिहासिक पन्नों में भी यह गढ़ दर्ज है और यहां विराजित कमलनाथ महादेव मंदिर की कथा रावण के यज्ञ से जुड़ी है जिसमें वह अपना शीश की बलि देता है। बताते हैं कि महाराणा प्रताप ने इस गढ़ पर भी कुछ समय के लिए अपना मोर्चा जमाया था। यहां की चोटी पर उन्होंने होली मंगल की थी। तब से आज तक आसपास के वनबंधु ऊंचाई पर प्रज्वलित अग्नि को देखकर ही अपने–अपने फले (ढाणी–गांव) में होली मंगल करते हैं। पूर्णिमा की रात को झाड़ोल से कई परिवार आवरगढ़ की इस चोटी पर पहुंचते हैं और यहां होलिका दहन के पश्चात टॉर्च की रोशनी में आधे मार्ग पर स्थित कमलनाथ महादेव मंदिर में आकर वहां दर्शन करने के बाद पहाड़ से नीचे उतरते हैं।

आज बिरज में होरी रे रसिया

होली रे रसिया, बरजोरी रे रसिया॥ ..आज बिरज में

चोवा चन्दन और अगरजा,

केसर मृगमद घोरी रे रसिया॥ आज बिरज में...

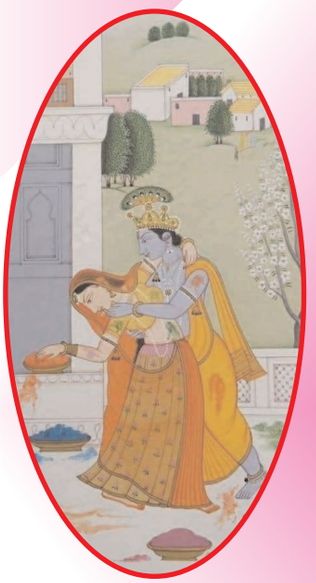

इधर से आए कुँवर कन्हैया, इधर से आए कुँवर कन्हैया

उधर से राधा गोरी रे रसिया॥ आज बिरज में...

अपने–अपने घर से निकलीं, अपने–अपने घर से निकली

कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया॥ आज बिरज में...

कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कनक पिचकारी

कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज बिरज में...

राधा के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कनक पिचकारी

श्याम के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज बिरज में...

आज बिरज में होरी रे रसिया

कितना लाल–गुलाल मँगाया, कितना लाल–गुलाल मँगाया
कितनी मँगाई केसर रे रसिया॥ आज बिरज में...

सौ मन लाल–गुलाल मँगाया, सौ मन लाल–गुलाल मँगाया
दस मन केसर घोली रे रसिया ॥ आज बिरज में...

उड़ा गुलाल लाल हुए बादल, उड़ा गुलाल लाल हुए बादल
केसर हवा में घुली रे रसिया॥ आज बिरज में...

बज रहे ताल मृदंग–झाँझ–ढप, बज रहे ताल मृदंग–झाँझ–ढप
और नगाड़ों की जोड़ी रे रसिया॥ आज बिरज में...

चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि
युग–युग जिए यह जोड़ी रे रसिया॥ आज बिरज में...

चंदन चोवा

नीता हर्ष

सामग्री

चंदन (सुखड़) के छिलके

या

पाउडर और चंदन का तेल

यह जानकारी वैष्णवों से प्राप्त हुई है।

बनाने की विधि

चंदन (सुखड़) के पाउडर या छिलके को एक बर्तन में जलाएं, बर्तन को इस तरह ढंकें कि पाउडर के जलने से उठने वाला धुआं ढक्कन पर जमा हो जाय।

सब छिलके जल जाने पर वह कोयला जैसा हो जायेगा। उसे ग्राइंडर में में पीस कर बिल्कुल मुलायम पाउडर जैसा बनालें। इस पाउडर को मलमल के कपड़े से छान लें। छने हुए बारीक पाउडर और ढक्कन पर जमा काजल को चन्दन के तेल में घोल लें चोवा तैयार है।

अबीर

नीता हर्ष

सामग्री

अरारोट,

गुलाबजल,

कपूर, बरास,

चंदन चूर्ण

अबीर बनाने की विधि

आरारोट में गुलाब जल मिलाएं। फिर उसे 12 घंटे के लिए धूप में सुखा दें। सूखने के बाद ग्राइंडर में पीस कर बारीक चूर्ण बना लें। सूखे चूर्ण को बारीक छलनी से छान लें।

कपूर, बरास, चंदनचूर्ण, कपूर काछली को ग्राइंडर में बारीक पीस कर अरारोट में मिला लें। अबीर तैयार है।

गुलाल बनाने की विधि

तैयार अबीर में मन चाहे लाल,पीला, नीला, गुलाबी, केसरी, फिरोजी, रानी, सुवापंखी, रंग मिला लें। केवल प्राकृतिक वनस्पति रंगों का ही इस्तेमाल करें।

डॉ. हिमांशु शर्मा
(लेखक)
राजस्थान

समरसता की होली

भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पहलू है त्यौहार। पूरे वर्ष भर कोई न कोई त्यौहार आता ही रहता है। इन त्यौहारों में कुछ त्यौहार अपनी भव्यता और व्यापकता के लिए प्रसिद्ध हैं। उत्साह और आह्लाद के साथ इन त्यौहारों का आयोजन होता है। भारतीय त्यौहारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनकी पृष्ठभूमि में पौराणिक ऐतिहासिक घटनाएं होती है जो हमें जीवन के विविध रूपों का दर्शन कराती है। सभी त्यौहार हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। मेरे विचार में संस्कृति और संस्कार में एक प्रचलित भेद है। संस्कृति से तात्पर्य भूतकाल में हमारे पूर्वजों के द्वारा जो नैतिक मूल्य स्थापित किए गए या हमारी सभ्यता में जिन कर्मों को स्वीकार किया गया उसे संस्कृति कहते हैं। उनके रहन–सहन आचार व्यवहार को हम संस्कृति से अभिहीत करते हैं। संस्कार का संबंध वर्तमान से होता है। आज का हमारा व्यवहार और सामाजिक, नैतिक स्थापन कल की संस्कृति बनेगा।

भारत की विविधता इसका इंद्रधनुषीय सौंदर्य है। भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। कुछ त्यौहार ऐसे हैं जिन्हें किसी क्षेत्र की परिधि में आबद्ध नहीं किया जा सकता है। इन्हीं त्यौहारों में होली ऐसा त्यौहार है जो सदियों से भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग बना हुआ है। हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला यह त्यौहार शीत और ग्रीष्म ऋतु की मिलन बेला में समाज में उमंग और रंग बिखेर देता है। चैत्र माह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को होली का उत्सव नव वर्ष का मृदंग बजाते हुए भक्ति और शक्ति की विजय बैजयंती फहराते हुए हमारे जीवन में प्रवेश करता है। होलिका दहन का दूसरा दिन खुशियों के अबीर से संगीतमय वातावरण अपने भीतर पौराणिक आख्यान लिए हुए है। भक्त प्रहलाद विष्णु में आस्था रखते थे। हिरण्यकश्यप आसुरी प्रवृत्ति के होने के कारण स्वयं को ईश्वर मानते थे। हिरण्यकश्यप ने अनेक प्रयास किए ताकि भक्त प्रहलाद विष्णु की आराधना छोड़ दें।

हरिण्यकशिपु प्रहलाद से बहुत क्रुद्ध होकर उसे मारना चाहते थे, इसके लिए होलिका और हरिण्यकशिपु ने एक योजना बनाई। होलिका जिसे भगवान शंकर से एक ऐसी चादर वरदान स्वरूप प्राप्त हुई जिसे ओढ़ने पर अग्नि उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई। भक्ति की शक्ति के चमत्कार से जो चादर होलिका ओढ़ कर बैठी थी, वह चादर उड़कर प्रहलाद के ऊपर आ गई और प्रहलाद की जगह होलिका जल गई।

भारतीय संस्कृति का यही प्राणतत्व रहा है कि आसुरी अत्याचारी का सदैव अंत हुआ है। जो अपने धर्म पर दृढ़ रहता है और ईश्वर में विश्वास रखता है, उसे जीवन में सफलता प्राप्त होती है। प्रहलाद को अमरत्व प्राप्त हुआ। होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत है। होलिका दहन के दिन बुराई, अहंकार और नकारात्मकता को पवित्र अग्नि में जलाया जाता है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में होली का पर्व अपने–अपने रंगानुसार मनाया जाता है। मथुरा–वृंदावन की होली पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। यहां होली की धूम 16 दिनों तक छाई रहती है। राधा कृष्ण के दैवीय प्रेम को याद किया जाता है। इस क्षेत्र में रंग और गुलाल लगाकर लोग एक–दूसरे से स्नेह बांटते हैं। बरसाने की लठमार होली तो विश्व प्रसिद्ध है। राधा मैया के गांव में महिलाएं पुरुषों को लठ मारती हैं और पुरुष उनसे बचते हुए उन पर रंग लगाते हैं।

होली का पर्व समाज में भाईचारे को बढ़ाता है। यह पर्व एक दूसरे को जोड़ता है। अबीर–गुलाल से सारा वातावरण इंद्रधनुषीय हो जाता है।

हरियाणा में होली भाभी देवर के रिश्ते की मिठास बरसाते हुए मनाया जाता है। भाभियां अपने प्यारे देवरों को पीटती हैं, और देवर सारे दिन रंग डालने की फिराक में रहते हैं। इस क्षेत्र में होली को धुलंडी कहा जाता है। महाराष्ट्र और गुजरात में मटकी–फोड़ होली की परंपरा है। पुरुष मक्खन से भरी मटकियों को फोड़ते हैं, जिसे महिलाएं ऊंचाई पर बांधती हैं।

बंगाल में होली 'डोल पूर्णिमा' के स्वरूप मनाई जाती है। भगवान चैतन्य महाप्रभु का जन्म उत्सव भी इसी दिन मनाया जाता है। रविंद्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन में होली को 'वसंत उत्सव' के रूप में मनाया जाता है। पंजाब में होली का पर्व शारीरिक व सैनिक प्रबलता के रूप में मनाया जाता है। होली के अगले दिन आनंदपुर साहिब में 'होला मोहल्ला' का आयोजन होता है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में होली पर्व अपने स्थानीय अंदाज में मनाया जाता है। गुलाल के रंगों से सारा वातावरण सराबोर हो जाता है। सभी के जीवन में खुशियां बिखेरने वाला यह त्यौहार राजस्थान में ऐसा पर्व है जिसे समाज के सभी लोग वर्ग भेद को भुलाकर हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। गैर नृत्य और जुलूस निकालते हुए गली मोहल्लों से गाते नाचते लोग चलते हैं। घरों में महिलाएं पकवान बनाती हैं। रंग तेरस और शीतला सप्तमी पर्व पर भी राजस्थान में रंग उत्सव मनाया जाता है।

किसानों के जीवन में भी होली का अलग ही महत्व है। होली के दिन से ही किसान फसलों के पकने का इंतजार करने लगता है, इसलिए होली के दिन जौ और गेहूं की बालियां भूनकर उन्हें प्रसाद के रूप में ग्रहण करने की परंपरा है।

होली का पर्व समाज में भाईचारे को बढ़ाता है। यह पर्व एक दूसरे को जोड़ता है। अबीर–गुलाल से सारा वातावरण इंद्रधनुषीय हो जाता है। इस दिन सभी अपने मतभेदों को भुलाकर जीवन में आगे की ओर बढने का प्रण लेते हैं। होली खुशियों का त्यौहार है। होली का पर्व समाज में एक संदेश देता है कि हमें समाज में भेदभाव और नफरत से दूर रहना चाहिए।

राही
(लेखक)
राजस्थान

चटकीले रंग फाल्गुन के

हिन्दू पंचांग का बारहवां मास फाल्गुन खुशियों के रंग बिखेरने वाला, नई उमंगें जगाने वाला महीना है। इस मास में मौसम बड़ा सुखद होता है। न अधिक गर्मी होती है, न अधिक सर्दी। इसे आनंद और उल्लास का महीना माना जाता है। इस मास की पूर्णिमा फाल्गुनी नक्षत्र से युक्त होती है इसलिए इसे फाल्गुन नाम दिया गया है। वर्ष 2020 में फाल्गुन मास 10 फरवरी से शुरू होगा और 9 मार्च तक रहेगा। फाल्गुन माह में अनेक महत्वपूर्ण पर्व मनाए जाते हैं जिनमें महाशिवरात्रि और होली प्रमुख हैं।

12 फरवरी महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती

आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज–सुधारक आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात में मोरवी के पास काठियावाड़ क्षेत्र के राजकोट जिले के टंकारा में हुआ था। उनके पिता करशनजी लालजी तिवारी और माँ यशोदाबाई थीं। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। वेदों की ओर लौटो का उपदेश देने वाले महर्षि दयानंद ने ही सबसे पहले 1873 में 'स्वराज्य' का नारा दिया था।

19 महाराजा छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म दिवस

अपनी वीरता से मुगलों को घुटने टेकने पर मजबूर करने वाले हिंदू हृदय सम्राट, मराठा गौरव छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 को पुणे के निकट शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। उनके पिता का नाम शाहजी और माता का जीजाबाई था। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उनकी सेना में कई महत्वपूर्ण पदों पर मुस्लिम थे। शिवाजी महिलाओं को भी माता की तरह सम्मान करते थे और इसका सख्ती से पालन कराते थे।

फाल्गुन मास के व्रत व त्यौहार

13 फरवरी : विश्व रेडियो दिवस

रेडियो आज दुनिया की 95 प्रतिशत आबादी तक अपनी पहुंच बना चुका है। यह बहुत कम लागत पर दूर–दराज के समुदायों और छोटे समूहों तक सूचनाएं पहुंचाने का सबसे सुगम साधन है। महत्वपूर्ण समाचार और लोक कल्याणकारी सूचनाएं आम जनता तक पहुंचाने और जनजागरण में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रेडियो की भूमिका को रेखांकित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र रेडियो की वर्षगांठ 13 फरवरी को पूरे विश्व में रेडियो दिवस मनाया जाता है।

18 फरवरी : ताज महोत्सव

आगरा में ताजमहल के पूर्वी द्वार के निकट स्थित शिल्पग्राम में हर साल 18 से 27 फरवरी तक ताज महोत्सव होता है। इस महोत्सव में भारत की सांस्कृतिक विविधता के दर्शन होते हैं। देश के कोने कोने से चुने हुए कलाकार यहां पहुंचते हैं और अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। 10 दिन चलने वाला यह उत्सव एक ऐसा मंच है जहां हम भारत के सांस्कृतिक वैभव से रूबरू हो सकते है। यह उत्सव कला, शिल्प, नृत्य, संगीत व्यंजन और भारत की विविध संस्कृतियों का मेला है। इसका आयोजन उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग की ओर से किया जाता है। यह हमारे देश में पर्यटन को बढ़ाने का जरिया है। इस उत्सव की शुरुआत 1992 में हुई थी। तब इसका उद्देश्य स्थानीय कलाकारों और आगरा की परंपराओं का प्रचार–प्रसार करना था। आज देश के लगभग सभी राज्यों के 400 से अधिक कलाकार महोत्सव में हिस्सा लेने आते हैं। यह महोत्सव कलाकारों को अपने हुनर का प्रदर्शन करने और उनके उत्पादों की बिक्री के लिए उचित मंच प्रदान करता है।

14 फरवरी : वेलेंटाइन दिवस

वेलंटाइन दिवस भारतीय परम्पराओं का हिस्सा नहीं है। फिर भी पिछले कुछ दशकों से भारतीय समाज में भी वेलेंटाइन दिवस मनाने का रिवाज चल पड़ा है। इस दिन लोग अपने प्रिय के समक्ष अपनी भावनाओं को उजागर करने के लिए कार्ड, फूल तथा तरह तरह के उपहार में देते हैं। माना जाता है कि यह दिवस ईसाई संत वेलेंटाइन की याद में मनाया जाता है। रोम में तीसरी सदी में राजा क्लैडियस का शासन था। कहा जाता है कि क्लैडियस का मानना था कि अविवाहित पुरुष ही वीर होते हैं, विवाह करने के बाद पुरुषों की शक्ति और बुद्धि क्षीण हो जाती है। राजा क्लैडियस ने आदेश जारी कर अपने सैनिकों और अधिकारियों के विवाह पर रोक लगा दी। उस वक्त रोम में संत वेलेंटाइन पादरी थे उन्होंने राजा के आदेश का विरोध किया। वेलेंटाइन के कहने पर सैनिकों और अधिकारियों ने विवाह करना शुरू कर दिया। राजा को जब इस बात का पता चला तो उसने वेलंटाइन को मौत की सजा देने का आदेश दे दिया। राजा के आदेश पर संत वेलेंटाइन को गिरफ्तार कर 14 फरवरी 269 ईस्वी को मौत के घाट उतार दिया गया। पोप ग्लेसियस ने 14 फरवरी 496 ईस्वी को सेंट वेलेंटाइन्स डे घोषित कर दिया।

फाल्गुन मास के व्रत व त्यौहार

21 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी–चतुर्दशी

फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इसी दिन को सृष्टि का प्रारंभ भी माना गया है।

होलाष्टक

होली से पूर्व के आठ दिनों को होलाष्टक कहते हैं। इस तरह होलाष्टक फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से शुरू हो जाते हैं। होलाष्टक के पहले दिन होलिका दहन के लिए स्थल का चयन कर होली का डंडा गाड़ दिया जाता है। इस दिन से होली से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन शुरू हो जाता है। गलियों चौराहों में डफ की ताल के साथ फाग और धमाल के स्वर गूंजने लगते हैं। होलाष्टक लगने के बाद से सगाई, विवाह, गृहप्रवेश जैसे मांगलिक कार्य नहीं किये जाते।

पौराणिक मान्यता

होलाष्टक को लेकर कई तरह की मान्यताएं लोक में प्रचलित हैं। कहा जाता है कि होलाष्टक की शुरुआत उस दिन से हुई जिस दिन भगवान शंकर ने अपना तीसरा नेत्र खेलकर काम देव को भस्म किया।

एक अन्य मान्यता के अनुसार स्वयं को सर्व शक्तिमान मानने वाले असुर हरिण्यकशिपु का पुत्र भगवान विष्णु का परम भक्त था। हरिण्यकशिपु चाहता था कि प्रह्लाद भगवान विष्णु की भक्ति करना बंद करे हरिण्यकशिपु को ही भगवान माने। प्रह्लाद ने हरिण्यकशिपु की बात को माना नहीं वह भगवद् भक्ति में लगा रहा।

8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धियों को याद करने और महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से हर साल 8 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाए जाने के पीछे कई कारण हैं। रूस और अमरीका में महिलाओं के आंदोलन इसके प्रमुख कारण बने।

बेहतर वेतन देने, काम के घंटे घटाने और मताधिकार की मांग को लेकर वर्ष 1908 में अमरीका में लगभग 15000 महिलाओं ने प्रदर्शन किया। यह एक ऐतिहासिक घटना थी। इस घटना के एक साल बाद सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमरीका ने इस दिन को राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर 28 फरवरी 1909 को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इसके बाद 1910 में जर्मनी और 19 मार्च 1911 को आस्ट्रिया, डेनमार्क और स्विट्जरलैंड में भी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।

1910 में कोपेनहेगन में आयोजित कामकाजी महिलाओं के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में महिलाओं के अधिकारों को लेकर मुखर रहने वाली मार्क्सवादी चिंतक क्लारा जेटकिन ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सुझाव दिया था। इस सम्मेलन में 17 देशों की 100 महिलाएं भाग ले रही थीं। सभी ने क्लारा के सुझाव का समर्थन किया। इस सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को लेकर कोई तारीख नहीं तय की गई। 1917 में बोल्शेविक क्रांति के दौरान रूस की महिलाओं ने ब्रेड एंड पीस की मांग की। महिलाओं की हड़ताल के दबाव के कारण ने वहां के सम्राट निकोलस को पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

फाल्गुन मास के व्रत व त्यौहार

9 मार्च : फाल्गुन पूर्णिमा : होली

रंगों का त्यौहार होली भारत का प्रमुख त्यौहार है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन किया जाता है। होली की अग्नि में सूखी पत्तियां, टहनियां व सूखी लकड़ियां डाली जाती हैं। लोग इसी अग्नि के चारों ओर नृत्य व संगीत का आनन्द लेते हैं।

10 मार्च : धूलंडी

होलिका दहन के अगले दिन को धूलंडी कहते हैं। इस दिन रंगों से होली खेली जाती है। देश में जगह–जगह पूर्णिमा से अगली एकादशी तक रंगपंचमी, रंग सप्तमी, एकादशी आदि तिथियों पर रंग खेलने की परम्परा है। शीतला सप्तमी भी इन्हीं दिनों में आती है।

श्रीमती नीता हर्ष
(लेखिका)
राजस्थान

हारे के सहारे खाटूश्याम जी

बर्बरीक, जिन्हें आज खाटूश्याम के नाम से पूजा जाता है, महाभारत के महान योद्धा थे। असीम शक्तियों से सम्पन्न बर्बरीक को उनकी मां ने हारे हुए का सहारा बनने की सीख दी। बर्बरीक ने अपनी मां की सीख को अपने जीवन का सिद्धांत बना लिया। अपने वचन पर दृढ रहने वाले बर्बरीक अपना वचन पूरा करने के लिए अपना शीश देने से भी नहीं हिचके। इसलिए उन्हें शीश का दानी भी कहा जाता है। बर्बरीक महाबली भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र थे।

हस्तिनापुर नरेश शान्तनु और रानी सत्यवती के दो पुत्र थे, चित्रांगद और विचित्रवीर्य। महाराज शान्तनु का स्वर्गवास चित्रांगद और विचित्रवीर्य के बाल्यकाल में ही हो गया। दोनों राजकुमारों का पालन पोषण भीष्म ने किया। चित्रांगद के युवा होने पर भीष्म ने उसे हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया। चित्रांगद गन्धर्वों के साथ युद्ध में मारा गया। चित्रांगद के मारे जाने के बाद भीष्म ने उनके अनुज विचित्रवीर्य को राज्य सौंप दिया। विचित्रवीर्य का विवाह काशीराज की कन्याओं अम्बिका और अम्बालिका के साथ हुआ।

दोनों ही रानियों से विचित्रवीर्य के कोई सन्तान नहीं हुई और वे क्षय रोग से पीड़ित हो कर मृत्यु को प्राप्त हो गये। वंश को नष्ट होते देख विचित्रवीर्य की माता सत्यवती ने भीष्म को दोनों रानियों से पुत्र उत्पन्न करने की आज्ञा दी, लेकिन भीष्म तो आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा ले चुके थे। उन्होंने अपनी माता के आदेश को मानने से इनकार कर दिया।

वन में रहने के दौरान एक दिन पाण्डु अपनी पत्नी माद्री के साथ नदी के किनारे भ्रमण कर रहे थे। मन चंचल हो जाने से पांडु मैथुन में प्रवृत्त हो गए और शापवश उनकी मृत्यु हो गई।

वंश के नष्ट हो जाने की आशंका से ग्रसित माता सत्यवती ने अपने पुत्र वेद व्यास को याद किया। स्मरण करते ही वेदव्यास वहां उपस्थित हो गये। सत्यवती ने वेद व्यास से कहा पुत्र तुम्हारे भाई निःसन्तान ही स्वर्गवासी हो गये। अतः मेरे वंश को नाश होने से बचाने के लिये मैं तुम्हें उनकी पत्नियों से सन्तान उत्पन्न करने की आज्ञा देती हूं। वेद व्यास ने माता की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए कहा कि दोनों रानियां पूरे एक वर्ष नियम आदि का पालन करने पर ही गर्भ धारण कर पाएंगी। एक वर्ष बीत जाने के बाद वेद व्यास सबसे पहले बड़ी रानी अम्बिका के पास गये। अम्बिका वेद व्यास के तेज को सहन नहीं कर पाई उसने अपनी आंखें बंद कर ली। वेदव्यास ने लौट कर माता सत्यवती को बताया कि अम्बिका का पुत्र बड़ा तेजस्वी किन्तु नेत्रहीन होगा। यह सुन कर सत्यवती को अत्यन्त दुःख हुआ और उन्होंने वेदव्यास को छोटी रानी अम्बालिका के पास भेजा। अम्बालिका वेद व्यास को देख कर भय से पीली पड़ गई। उसके कक्ष से लौट कर वेद व्यास ने सत्यवती से कहा, 'माता! अम्बालिका के गर्भ से जन्म लेने वाला पुत्र पाण्डु रोग से ग्रसित होगा।'

इससे माता सत्यवती को और भी दुःख हुआ, उन्होंने बड़ी रानी अम्बिका को पुनः वेदव्यास के पास जाने का आदेश दिया। इस बार बड़ी रानी ने स्वयं न जा कर अपनी दासी को वेद व्यास के पास भेज दिया। दासी ने आनन्दपूर्वक वेद व्यास के साथ समय बिताया। इस बार वेद व्यास ने माता सत्यवती के पास आ कर कहा, 'माते! इस दासी के गर्भ से वेद–वेदान्त में पारंगत अत्यन्त नीतिवान पुत्र उत्पन्न होगा।' इतना कह कर वे तपस्या करने चले गये।

समय आने पर अम्बिका के गर्भ से जन्मान्ध धृतराष्ट्र, अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु रोग से ग्रसित पाण्डु तथा दासी के गर्भ से धर्मात्मा विदुर का जन्म हुआ।

धृतराष्ट्र जन्म से ही नेत्रहीन थे, अतः उनकी जगह पर पाण्डु को हस्तिनापुर का राजा बनाया गया। एक बार वन में आखेट खेलते हुए पाण्डु के बाण से एक मैथुनरत मृगरूपधारी ऋषि की मृत्यु हो गयी। उस ऋषि ने पांडु को शाप दिया कि तू जब कभी भी मैथुनरत होगा, तेरी मृत्यु हो जायेगी। इस शाप के चलते पाण्डु ने हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र को अपना का प्रतिनिधि बनाया और स्वयं समस्त वासनाओं का त्याग कर अपनी पत्नियों कुंती और माद्री के साथ वन में रहने लगे।

पाण्डु के इन दोनों पत्नियों से पांच पुत्र हुए युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव। ये पांचों पांडव कहलाए।

वन में रहने के दौरान एक दिन पाण्डु अपनी पत्नी माद्री के साथ नदी के किनारे भ्रमण कर रहे थे। मन चंचल हो जाने से पांडु मैथुन में प्रवृत्त हो गए और शापवश उनकी मृत्यु हो गई। माद्री उनके साथ सती हो गई। कुंती पांचों पांडवों को लेकर हस्तिनापुर लौट आई।

हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र राज गद्दी पर विराजमान थे। उनके सौ पुत्र थे। सबसे बड़ा पुत्र दुर्योधन था। दुर्योधन पांडु पुत्रों के प्रति बैर भाव रखता था। उसने अपने कपटी मामा शकुनी की सहायता लेकर पाण्डवों को बचपन में कई बार मारने का प्रयास किया ।

पांचों पांडवों में सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर हस्तिनापुर अपने उत्तम गुणों के कारण हस्तिनापुर के प्रजाजनों में अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। उनके गुणों तथा लोकप्रियता को देखते हुये भीष्म पितामह ने धृतराष्ट्र से युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर देने के लिये कहा।

दुर्योधन नहीं चाहता था कि युधिष्ठिर राजा बने अतः उसने अपने पिता धृतराष्ट्र से कहा, 'पिताजी! यदि एक बार युधिष्ठिर को राजसिंहासन प्राप्त हो गया तो यह राज्य सदा के लिये पाण्डवों के वंश का हो जायेगा और हमें उनका सेवक बन कर रहना पड़ेगा।' इस पर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा कि युधिष्ठिर हमारे कुल के सन्तानों में सबसे बड़ा है इसलिये इस राज्य पर उसी का अधिकार

दुर्योधन ने वारणावत में पाण्डवों के निवास के लिये पुरोचन नामक शिल्पी से लाक्षागृह का निर्माण करवाया था। यह लाक्षा गृह लाख, चर्बी आदि ज्वलनशील पदार्थों से बना था।

है। फिर भीष्म तथा प्रजाजन भी उसी को राजा बनाना चाहते हैं। हम इस विषय में कुछ भी नहीं कर सकते।

दुर्योधन ने पांडवों को अपने मार्ग से हटाने का षड्यंत्र रच लिया था। उसने धृतराष्ट्र से कहा पिताजी बस आप किसी तरह पाण्डवों को वारणावत भेज दें।

दुर्योधन ने वारणावत में पाण्डवों के निवास के लिये पुरोचन नामक शिल्पी से लाक्षागृह का निर्माण करवाया था। यह लाक्षा गृह लाख, चर्बी आदि ज्वलनशील पदार्थों से बना था। दुर्योधन इस लाक्षा गृह में पांडवों को जला कर मार डालना चाहता था।

पुत्र मोह में फंसे धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को अपनी माता और भाइयों सहित वारणावत जाने को कहा। युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के आदेश को स्वीकार करते हुए अपनी माता तथा भाइयों के साथ वारणावत के लिए निकल पड़ा। इस बीच विदुर को दुर्योधन के षड़यन्त्र की जानकारी मिल गई। विदुर ने पांडवों से सम्पर्क साधा उन्हें सारे षड्यंत्र की जानकारी दी। उन्होंने पांडवों से कहा कि वारणावत पहुंचते ही भवन के अन्दर से वन तक पहुंचने के लिये एक सुरंग बनवा लेना ताकि आग लगने पर तुम लोग सुरक्षित वहां से निकल सको। विदुर ने सुरंग बनाने में माहिर एक कारीगर उनके पास भेज दिया।

वारणावत में लाक्षागृह पहुंचते ही युधिष्ठिर ने अपने चाचा विदुर के भेजे गये कारीगर की सहायता से गुप्त सुरंग बनवा ली। इसके साथ ही पाण्डवों ने वन में अपने छिपने के लिए उपयुक्त स्थान भी खोज लिया। कुछ दिन युधिष्ठिर ने भीम से कहा कि अब दुष्ट पुरोचन को इसी लाक्षागृह में जला कर हमें भाग निकलना चाहिये। भीम ने उसी रात पुरोचन को बुलवाया और उसे उस भवन के एक कक्ष में बन्दी बना दिया। उसके पश्चात् भवन में आग लगा कर अपनी माता कुन्ती एवं भाइयों के साथ सुरंग के रास्ते वन की ओर निकल पड़े।

माता कुंती और पांडव वन में चलते चलते थक गए। एक वट वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। माता कुंती को प्यास लगी। भीम पानी की खोज में निकले। उन्हें जलाशय मिल गया। वे अपनी मां और भाइयों के लिए जल लेकर आए तब वे सभी निद्रामग्न हो चुके थे। भीम ने उनको जगाना उचित नहीं समझा और वहीं पहरा देने लगे।

उस वन में एक भयानक असुर रहता था। उसका नाम था हिडिम्ब। हिडिम्ब के साथ उसकी एक बहन भी रहती थी। बहन का नाम हिडिम्बा था। हिडिम्ब को दूर से ही मानवों की गंध आने लगती थी। उसने अपनी बहन हिडिम्बा से कहा कि निकट में कहीं मानव हैं उन्हें पकड़ कर लाओ ताकि उन्हें खा कर हम अपनी क्षुधा पूर्ति कर सकें। मानुस गंध का पीछा करते – करते हिडिम्बा वहां पहुंच गई जहां पांडव अपनी माता कुंती के साथ विश्राम कर रहे थे। हिडिंबा ने पहरा देते हुए भीम को देखा तो वह उन पर आसक्त हो गई। वह सुंदर कन्या का रूप धर भीम के पास पहुंची। भीम ने उससे पूछा तुम कौन हो और इतनी रात गए इस वन में अकेली क्यों घूम रही

हिडिम्बा घटोत्कच को लेकर पाण्डवों के पास पहुंची और कहा, यह आपके भाई की सन्तान है, इसे आप अपनी सेवा में रखें।

हो। हिडिम्बा ने भीम को सब सच बता दिया। उसने भीम से कहा कि उसके भाई ने मुझे आप लोगों को पकड़ कर लाने के लिये भेजा है किन्तु मेरा हृदय आप पर आसक्त हो गया है अब मैं आपको अपने पति के रूप में प्राप्त करना चाहती हूं।

बहन को लौट कर आने में विलम्ब होता देख कर हिडिम्ब उस स्थान पर जा पहुंचा जहां पर हिडिम्बा भीम से वार्तालाप कर रही थी। हिडिम्बा को भीम के साथ वार्तालाप करते देख वह क्रोधित हो उठा और हिडिम्बा को दण्ड देने के लिये उसकी ओर झपटा। यह देख कर भीम ने उसे रोकते हुये कहा, 'दुष्ट राक्षस! तुझे स्त्री पर हाथ उठाते लज्जा नहीं आती? यदि तू इतना ही वीर और पराक्रमी है तो मुझसे युद्ध कर।' इतना कह कर भीम ताल ठोंक कर उसके साथ मल्ल युद्ध करने लगे। युद्ध में हिडिम्ब मारा गया। इस बीच कुंती तथा अन्य पाण्डव भी जाग गए। कुन्ती ने हिडिम्बा से उसका परिचय पूछा। हिडिम्बा ने कुंती को सारा वृत्तांत कह सुनाया।

हिडिम्ब के मरने के बाद पाण्डव वहां से प्रस्थान की तैयारी करने लगे, तब हिडिम्बा ने कुन्ती से कहा कि मैंने आपके पुत्र भीम को अपना पति मान लिया है। अतः आप मुझे स्वीकार करने की कृपा करें। यदि आप लोगों ने मुझे स्वीकार नहीं किया तो मैं इसी क्षण अपने प्राण त्याग दूंगी। हिडिम्बा के हृदय में भीम के प्रति प्रेम भव देख युधिष्ठिर बोले, 'हिडिम्बे! मैं तुम्हें अपने भाई को सौंपता हूं किन्तु यह केवल दिन में तुम्हारे साथ रहेगा तथा एक वर्ष पूरा होने अथवा तुम्हारे पुत्र पैदा होने के बाद वह उनके पास लौट आएगा। समय बीता हिडिम्बा ने बेटे को जन्म दिया। जन्म के समय, बच्चे के सिर पर बाल नहीं थे इसलिए उसका नाम घटोत्कच रखा गया।

हिडिम्बा घटोत्कच को लेकर पाण्डवों के पास पहुंची और कहा, यह आपके भाई की सन्तान है, इसे आप अपनी सेवा में रखें। इतना कह कर हिडिम्बा वहां से चली गई। घटोत्कच पाण्डवों तथा माता कुन्ती को प्रणाम कर बोला, मुझे मेरे योग्य सेवा बतायें। कुन्ती ने कहा समय आने पर तुम्हारी सेवा अवश्य ली जायेगी। घटोत्कच ने कहा,

कुछ समय बाद भीष्म पितमाह और विदुर ने पांडवों केा बुला कर इंद्रप्रस्थ का शासन उन्हें सौंप दिया। इंद्रप्रस्थ को बसाना एक चुनौती थी।

आप लोग जब भी मुझे याद करेंगे, मैं आप की सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा। इतना कह कर घटोत्कच हिमालय की ओर प्रस्थान कर गया।

कुछ समय बाद भीष्म पितमाह और विदुर ने पांडवों केा बुला कर इंद्रप्रस्थ का शासन उन्हें सौंप दिया। इंद्रप्रस्थ को बसाना एक चुनौती थी। ऐसे समय में घटोत्कच अपना कर्तव्य समझते हुए अपने पिता के पास पहुंचे। पांडव अपने युवा पौत्र से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। धर्मराज युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण से कहा कि भीम का पुत्र घटोत्कच विवाह योग्य हो गया है। श्री कृष्ण ने सहमति जताते हुए घटोत्कच से कहा, प्रागज्योतिषपुर में एक शक्तिशाली दानव मूर की अत्यंत बुद्धिमान बेटी कामकांतकट (मोर्वी) विवाह योग्य है, वह उसी से विवाह करेगी जो उसे शास्त्रार्थ में पराजित कर सके। उसे शास्त्रार्थ में पराजित कर अपने साथ ले आओ। घटोत्कच कामकांतकट को शास्त्रार्थ में पराजित कर इंद्रप्रस्थ ले कर आ गया। जहां दोनों ने भगवान श्री कृष्ण की उपस्थिति में विवाह कर लिया। कुछ समय बाद कामकांतकट ने एक पुत्र को जन्म दिया। जन्म के समय, उसके पूरे शरीर पर बब्बर शेर की तरह बाल थे। इसलिए उसका नाम बर्बरीक रखा गया।

बाल्यकाल से ही वीर और महान योद्धा बर्बरीक ने युद्ध–कला अपनी मां से सीखी। समस्त अस्त्र–शस्त्र, विद्या हासिल करने के बाद महीसागर क्षेत्र में 3 वर्ष तक नवदुर्गा की आराधना की।

महाबली घटोत्कच अपने पुत्र बर्बरीक को भगवान् श्री कृष्ण के पास द्वारका ले गये और उन्हें देखते ही श्री कृष्ण ने वीर बर्बरीक से कहा– हे पुत्र मोर्वेय! जिस प्रकार मुझे घटोत्कच प्यारा है, उसी प्रकार तुम भी मुझे प्यारे हो। बर्बरीक ने श्री कृष्ण से पूछा– हे प्रभु! इस जीवन का सर्वोत्तम उपयोग क्या है? बर्बरीक के इस निश्छ्ल प्रश्न को सुनते ही श्री कृष्ण ने कहा– जीवन का सर्वोत्तम उपयोग, परोपकार करने, निर्बल का सहारा बनने तथा धर्म का साथ देने में है। ऐसा करने के लिए बल एवं शक्तियां अर्जित करनी पड़ती हैं। अतः तुम महीसागर क्षेत्र में नवदुर्गा की आराधना कर शक्तियां अर्जित करो।

बाल्यकाल से ही वीर और महान योद्धा बर्बरीक ने युद्ध–कला अपनी मां से सीखी। समस्त अस्त्र–शस्त्र, विद्या हासिल करने के बाद महीसागर क्षेत्र में 3 वर्ष तक नवदुर्गा की आराधना की। बर्बरीक की निष्ठा एवं तप से प्रसन्न होकर मां जगदम्बा ने बर्बरीक को तीन बाण एवं तीनों लोकों पर पर विजय प्राप्त करने लायक शक्तियां प्रदान कीं। मां जगदम्बा वीर बर्बरीक को उसी क्षेत्र में

ब्राह्मण वेश धारी श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से पूछा दान दोगे? बर्बरीक ने वचन दिया कि अगर वह समर्थ होगा तो अवश्य देगा। श्रीकृष्ण ने उनसे शीश का दान मांग लिया।

अपने परम भक्त विजय नामक एक ब्राह्मण की सिद्धि को सम्पूर्ण करवाने का निर्देश देकर अंतर्ध्यान हो गयीं। जब विजय ब्राह्मण का आगमन हुआ तो वीर बर्बरीक ने पिंगल, रेपलेंद्र, दुहद्रुहा तथा नौ कोटि मांसभक्षी पलासी राक्षसों के जंगलरूपी समूह को अग्नि की भांति भस्म करके उनका यज्ञ सम्पूर्ण कराया। उस ब्राह्मण का यज्ञ सम्पूर्ण करवाने पर देवी–देवता वीर बर्बरीक से अति प्रसन्न हुए और प्रकट होकर यज्ञ की भस्मरूपी शक्तियां प्रदान कीं।

कौरवों और पाण्डवों के मध्य युद्ध अपरिहार्य हो गया था, यह समाचार जब बर्बरीक को मिला तो उन्होंने युद्ध में भाग लेने का निर्णय किया। इसके लिए वे अपनी मां से आशीर्वाद लेने पहुंचे। मां को हारे हुए पक्ष का साथ देने का वचन दिया। वे अपने लीले घोड़े पर सवार हो कर तीन बाण और धनुष के साथ रणभूमि की ओर अग्रसर हुए।

मार्ग में पीपल के एक पेड़ के नीचे श्री कृष्ण ने ब्राह्मण का वेश धर बर्बरीक को रोका और परिचय मांगा। बर्बरीक ने कहा कि यहां युद्ध होने वाला है, मैं योद्धा हूं, युद्ध में भाग लेने आया हूं। कृष्ण ने बर्बरीक के तरकश की ओर देख कर कहा तीन बाणों से युद्ध लड़ोगे? बर्बरीक ने कहा तीन बाणों की आवश्यकता ही कहां है, मेरा एक ही बाण शत्रु सेना को समाप्त कर पुनः तरकश में आ जाएगा। तीनों बाणों को काम में लेने से तो तीनों लोकों में हाहाकार मच जाएगा। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा इस पीपल के पेड़ के सभी पत्तों को छेदकर दिखलाओ।

बर्बरीक ने अपने तुणीर से एक बाण निकाला और पेड़ के पत्तों की ओर चलाया। तीर ने एक ही क्षण में पेड़ के सभी पत्तों को भेद दिया और श्रीकृष्ण के पैर के इर्द–गिर्द चक्कर लगाने लगा, क्योंकि एक पत्ता उन्होंने अपने पैर के नीचे छिपा लिया था, बर्बरीक ने कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिए वरना ये आपके पैर को चोट पहुंचा देगा। श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस ओर से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी मां को दिया वचन दोहराया कि वह युद्ध में हारे का सहारा बनेगा। श्रीकृष्ण यह जानते थे कि कौन हारेगा और कौन जीतेगा, लेकिन वे यह नहीं चाहते थे कि बर्बरीक कौरवों का साथ दे।

ब्राह्मण वेश धारी श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से पूछा दान दोगे? बर्बरीक ने वचन दिया कि अगर वह समर्थ होगा तो अवश्य देगा। श्रीकृष्ण ने उनसे शीश का दान मांग लिया। बर्बरीक क्षण भर के लिए चकरा गया, परन्तु अपने वचन पर दृढ़ रहते हुए बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तविक रूप में आने की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण अपने वास्तविक स्वरूप में आए तब बर्बरीक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की, श्रीकृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखाया।

कृष्ण ने कहा कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिए एक क्षत्रिय वीर के शीश के दान की आवश्यकता होती है, उन्होंने बर्बरीक को युद्ध में सबसे वीर की उपाधि से अलंकृत किया, अतएव उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने कहा कि लेकिन वह तो अंत तक युद्ध देखना चाहता है, श्रीकृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होंने अपने शीश का दान कर दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया, जहां से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे।

युद्ध की समाप्ति पर पांडवों में बहस होने लगी कि युद्ध में विजय का श्रेय किसको जाता है, इस पर श्रीकृष्ण ने उन्हें सुझाव दिया कि बर्बरीक का शीश सम्पूर्ण युद्ध का साक्षी है, अतएव उससे बेहतर निर्णायक भला कौन हो सकता है? सभी इस बात से सहमत हो गये। बर्बरीक के शीश ने उत्तर दिया कि श्रीकृष्ण की युद्धनीति ही निर्णायक थी। उन्हें युद्धभूमि में सिर्फ कृष्ण का सुदर्शन चक्र ही घूमता हुआ और शत्रु सेना को काटता हुआ दिखायी दे रहा था।

फाल्गुनी लक्खी मेला खाटूश्याम जी का मुख्य मेला है। यह दस दिवसीय मेला फाल्गुन की शुक्ल चतुर्थी से आरम्भ होता है।

लक्खी मेला

फाल्गुनी लक्खी मेला खाटूश्याम जी का मुख्य मेला है। यह दस दिवसीय मेला फाल्गुन की शुक्ल चतुर्थी से आरम्भ होता है। एकादशी मेले का मुख्य दिन होता है। समापन द्वादशी को होता है। कुछ भक्तगण होली तक खाटू में ही रुकते हैं और होली के दिन बाबाश्याम के संग होली खेलकर घर प्रस्थान करते हैं। अनुमान है कि मेले के दौरान देश के कोने–कोने से 30 से 40 लाख श्रद्धालु बाबा के दर्शन करने खाटू पहुंचते हैं। मेले के दौरान श्रद्धालु खाटूश्याम जी के दर्शन करने के पश्चात् भजन एवं कीर्तन का आनन्द लेते हैं। बहुत से श्रद्धालु हाथ में निसान लिए रींगस से पैदल चल कर तो कुछ दंडवत यात्रा करते हुए खाटू पहुंचते हैं। मेले के समय अनेक समाज सेवी संस्थाएं रींगस से खाटू तक सेवा शिविर लगाती है। इन शिविरों में पानी, चाय, जलपान तथा प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाएं श्रद्धालुओं को उपलब्ध करवाई जाती है।

राजा और उसके मंत्रियों को गाय के मालिक की बात पर विश्वास नहीं हुआ। राजा मंत्रियों को लेकर उस स्थान पर पहुंचा। राजा ने पाया कि गाय का मालिक सही बोल रहा है।

खाटूश्यामजी की कहानी

कहते हैं कि खट्वा नगरी में एक गाय रोज एक जगह पर जा कर खड़ी हो जाती थी और उसके थनों से स्वतः ही दूध की धार निकल पड़ती थी। यह क्रम बहुत दिनों तक चलता रहा। गौ मालिक ने सोचा की जरूर कोई उसकी गाय का दूध दूह लेता है। गौ मालिक ने एक दिन गाय का पीछा किया। संध्या के समय उसने देखा कि गाय का दूध अपने आप जमीन में समा रहा है। उसने पूरी पूरी कहानी राजा को बताई। राजा और उसके मंत्रियों को गाय के मालिक की बात पर विश्वास नहीं हुआ। राजा मंत्रियों को लेकर उस स्थान पर पहुंचा। राजा ने पाया कि गाय का मालिक सही बोल रहा है।

राजा ने उस जमीन की खुदाई करने का आदेश दिया।

अपने अभिशाप को वरदान में बदलते देख यक्षराज सूर्यवर्चा उस देवसभा से अदृश्य हो गये और कालान्तर में भीम के पुत्र घटोत्कच एवं मोरवी के संसर्ग से बर्बरीक के रूप में जन्मे।

खुदाई शुरू होते ही जमीन के भीतर से आवाज आई, अरे धीरे खोदो, यहां मेरा शीश है। उसी रात राजा को स्वप्न आया कि राजन अब मेरे शीश के अवतरित होने का समय आ गया है। मैं महाभारत काल में वीर बर्बरीक था, मैंने भगवान श्री कृष्ण को अपना शीश दान में दे दिया था जिसकी वजह से मुझे कलियुग में पूजित होने का वरदान मिला है। मेरा शीश उसी धरा से मिलेगा और तुम्हें मेरा खाटू श्याम मंदिर बनाना पड़ेगा। सुबह जब राजा उठा तो स्वप्न की बात को ध्यान रखकर खुदाई पुनः शुरू करा दी। और फिर जल्द ही कलियुग देव श्री श्याम का शीश उस धरा से अवतरित हुआ ।

पूर्व जन्म की कथा

द्वापरयुग के आरम्भ होने से पूर्व की बात है। मूर नामक एक दैत्य बड़ा अत्याचारी था। देवताओं सहित सभी जीव उसके आतंक से त्रस्त थ। मूर के अत्याचारों से व्यथित होकर पृथ्वी ने गौस्वरुप में देव सभा में उपस्थित होकर कहा कि मैं मूर दैत्य के अत्याचारों से दुखी होकर आपकी शरण में आई हूं। आप इस दुराचारी से मेरी रक्षा कीजिए।

पृथ्वी की करुण पुकार सुनकर देवसभा में सन्नाटा छा गया। थोड़ी देर के मौन के पश्चात् ब्रह्मा जी ने कहा— इससे छुटकारा पाने के लिए हमें भगवान् विष्णु की शरण में जाकर उनसे इस संकट निवारण के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

देवसभा में विराजमान यक्षराज सूर्यवर्चा ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा— 'हे देवगण! मूर दैत्य इतना प्रतापी नहीं, जिसका संहार केवल विष्णु जी ही कर सकें। हर एक बात के लिए हमें उन्हें कष्ट नहीं देना चाहिए। आप यदि मुझे आज्ञा दें तो मैं ही उसका वध कर सकता हूं।'

इतना सुनते ही ब्रह्मा जी बोले— 'नादान! मैं तेरा पराक्रम जानता हूं, तुम्हारे अहंकार ने इस देवसभा को चुनौती दी है। इसका दण्ड तुम्हें अवश्य मिलेगा। अपने आप को विष्णु जी से श्रेष्ठ समझने वाले अज्ञानी! तुम इस देवसभा से अभी पृथ्वी पर जा गिरोगे। तुम्हारा जन्म राक्षस योनि में होगा और जब द्वापरयुग के अंतिम चरण में पृथ्वी पर एक भीषण धर्मयुद्ध होगा तभी तुम्हारा शिरोच्छेदन स्वयं भगवान विष्णु करेंगे और तुम सदा के लिए राक्षस बने रहोगे।'

ब्रह्माजी के इस अभिशाप के साथ ही यक्षराज सूर्यवर्चा का गर्व चूर–चूर हो गया। वह तत्काल ब्रह्मा जी के चरणों में गिर पड़ा और विनम्र भाव से बोला— 'भगवन! भूलवश निकले इन शब्दों के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए मैं आपके शरणागत हूं। रक्षा कीजिए प्रभु!'

यह सुनकर ब्रह्मा जी में करुण भाव उमड़ पड़े, वह बोले— 'वत्स! तूने अभिमानवश देवसभा का अपमान किया है, इसलिए मैं इस अभिशाप को वापस नहीं ले सकता हूं। हां, इसमें संशोधन अवश्य कर सकता हूं कि स्वयं भगवान् श्री कृष्ण तुम्हारा शिरोच्छेदन अपने सुदर्शन चक्र से करेंगे, देवियों द्वारा तुम्हारे शीश का अभिसिंचन होगा। फलतः तुम्हें कलयुग में देवताओं के समान पूजनीय होने का वरदान स्वयं भगवान् श्री कृष्ण से मिलेगा।

अपने अभिशाप को वरदान में बदलते देख यक्षराज सूर्यवर्चा उस देवसभा से अदृश्य हो गये और कालान्तर में इस पृथ्वी लोक में महाबली भीम के पुत्र घटोत्कच एवं मोरवी के संसर्ग से बर्बरीक के रूप में जन्मे।

आज भी हर हृदय यही पुकारता है...

'कीर्तन की है रात,
बाबा आज थ्हाणै आणो है,
वचन निभाणो है...।'

राजीव हर्ष
(लेखक)
राजस्थान

शौर्य के शीर्ष छत्रपति शिवाजी

छत्रपति शिवाजी महाराज धर्मपरायण, वीरयोद्धा, महान शासक, कुशल रणनीतिकार, कुशल संगठन कर्ता और महान कूटनीतिज्ञ थे। शिवाजी महाराज ने वर्षों तक मुगलों के साथ संघर्ष करने के बाद 1674 ईस्वी मराठा साम्राज्य की नींव रखी। रायगढ़ में राज्याभिषेक होने के बाद वह 'छत्रपति' बने। मुगलों की विशाल सैन्य शक्ति को नाकों चने चबवाने वाले शिवाजी महाराज ने छापामार युद्ध की नयी शैली का विकास किया। छत्रपति शिवाजी महाराज ने योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन की व्यवस्था कर कुशल प्रशासक के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने फारसी के स्थान पर मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। प्राचीन हिन्दू राजनीतिक दर्शन को अपने शासन – प्रशासन का आधार बनाया।

आरम्भिक जीवन

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 20 जनवरी 1627 को शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। आपके पिता का नाम शाहजी भोंसले एवं माता का नाम जीजाबाई (राजमाता जिजाऊ) था। उनकी माता जीजाबाई यादव कुल में उत्पन्न असाधारण प्रतिभाशाली महिला थीं और उनके पिता शक्तिशाली सामंत थे। उन्होंने माता जीजा बाई के मार्गदर्शन में राजनीति एवं युद्ध की शिक्षा ली। वह सभी कलाओं में माहिर थे। देश के तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य को वे भली भांति समझते थे। तत्कालीन शासकों के नीतिविहीन कृत्य उन्हें बेचैन करते थे। वे हमेशा विदेशी शासकों को उखाड़ फेंकने के बारे में सोचते थे।

यद्यपि वे अपने दौर के अन्य शासकों की तरह निरंकुश थे, सत्ता के तमाम सूत्र उनके हाथों में थे फिर भी उन्होंने राज्य के संचालन के लिए आठ सदस्यों की परिषद बनाई।

कुशल शासक

शिवाजी महाराज के राज्य में व्यवस्थाओं के सुचारू संचालन के लिए सुदृढ़ प्रशासनिक ढांचा बना हुआ था। वे व्यवस्था को व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उनके राज्य में नौकरी या पद पाने का आधार केवल योग्यता था। राज्य सेवा में भर्ती की प्रक्रिया थी। व्यक्ति के गुण, रुचि और क्षमता के अनुसार कार्य के लिए उसका चयन किया जाता था।

गुप्तचर तंत्र

शिवाजी महाराज के स्वराज में गुप्तचरों का पूरा तंत्र था। यह गुप्तचर तंत्र स्वराज में होने वाली घटनाओं की सूचना प्रशासन के उच्चाधिकारियों तक पहुंचाता था। यह तंत्र इतना गुप्त और प्रभावशाली था कि कुछ लोगों को छोड़कर बाकी किसी गुप्तचर या उसकी किसी गतिविधि की जानकारी राज्य में कार्यरत किसी विभाग के मंत्री तक को नहीं होती थी।

अष्ट प्रधान

शुक्राचार्य तथा कौटिल्य शिवाजी महाराज के आदर्श थे। वे बहुत से मसले कूटनीति से हल करते थे। यद्यपि वे अपने दौर के अन्य शासकों की तरह निरंकुश थे, सत्ता के तमाम सूत्र उनके हाथों में थे फिर भी उन्होंने राज्य के संचालन के लिए आठ सदस्यों की परिषद बनाई। इस परिषद को अष्टप्रधान कहा जाता था। उनके पदनाम और कार्य इस प्रकार थे।

पेशवा : इन आठ मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहते थे। पेशवा राजा के बाद सबसे प्रमुख हस्ती होता था।

अमात्य : वित्त और राजस्व संबंधी कार्य देखते थे।

मंत्री : राजा के दिन भर के क्रियाकलापों का ध्यान रखते थे।

सचिव : दफ्तरी काम करते थे जिसमें शाही मुहर लगाना और सन्धि पत्रों का आलेख तैयार करना शामिल होते

थे।

सुमन्त : विदेश मंत्री को कहते थे।

पण्डितराव : दान और धार्मिक मामलों के प्रमुख को कहते थे।

न्यायाधीश : न्यायिक मामलों के प्रधान होते थे।

सेनापति : सेनापति सेना के दोनों अंगों पैदल सेना और अश्व सेना की देखरेख करते थे। पहले इस पद को 'सरनौबत' कहते थे। शिवाजी महाराज ने इस पद का नामकरण 'सेनापति' कर दिया। सेना में भर्ती, प्रशिक्षण, पदोन्नति, मानदेय, शस्त्र की व्यवस्था और रसद की आपूर्ति जैसे विभिन्न विभागों पर प्रशासनिक नियंत्रण करना और इस के बारे में महाराज को अवगत कराना सेनापति के प्रमुख कार्य थे।

विकेंद्रीकरण

शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य को कई विभागों में विभक्त कर रखा था। राज्य के हर प्रान्त में एक सूबेदार था। सूबेदार को प्रान्तपति कहा जाता था। हर प्रांत में अष्टप्रधान समिति थी। शिवाजी महाराज के स्वराज में

एक बार औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को धोखे से आगरा में नजरबंद कर दिया। वे करीब साढ़े चार माह अपने राज्य और राजधानी से दूर आगरा में ही रहे।

न्यायव्यवस्था प्राचीन भारतीय पद्धति पर आधारित थी। शुक्राचार्य, कौटिल्य और हिन्दू धर्मशास्त्रों को आधार मानकर निर्णय दिया जाता था। गांव के पटेल फौजदारी मुकदमों की जांच करते थे। राज्य की आय का साधन भूमि से प्राप्त होने वाला कर था। चौथ और सरदेशमुखी से भी राजस्व वसूला जाता था। 'चौथ' पड़ोसी राज्यों की सुरक्षा की गारंटी के लिए वसूले जाने वाला कर था। शिवाजी अपने को मराठों का सरदेशमुख कहते थे और इसी हैसियत से सरदेशमुखी कर वसूला जाता था।

एक बार औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को धोखे से आगरा में नजरबंद कर दिया। वे करीब साढ़े चार माह अपने राज्य और राजधानी से दूर आगरा में ही रहे। यह शिवाजी महाराज के कुशल प्रशासन का ही परिणाम था कि इन चार माह के दौरान उनके राज्य में किसी तरह की अराजकता नहीं फैली। सभी काम सुचारू ढंग से चलते रहे।

फारसी के स्थान पर संस्कृत और मराठी

राज्याभिषेक के बाद उन्होंने अपने एक मंत्री (रामचन्द्र आमात्य) को शासकीय उपयोग में आने वाले फारसी शब्दों को हटा कर उनके स्थान पर संस्कृत के शब्द ढूंढ़ने का कार्य सौंपा। धीरे धीरे राजकीय कार्यों में फारसी के स्थान पर संस्कृत और मराठी का उपयोग किया जाने लगा।

उन्होंने निर्णय सुनाया कि इसके दोनों हाथ और पैर काट दो, ऐसे जघन्य अपराध के लिए इससे कम कोई सजा नहीं हो सकती।

मृत्यु और उत्तराधिकार

शिवाजी महाराज की मृत्यु 3 अप्रैल 1680 में हुई। शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी को उनका उत्तराधिकारी बनाया गया। उनकी दूसरी पत्नी से एक और पुत्र था जिसका नाम राजाराम था। शिवाजी के निधन के समय राजाराम की उम्र मात्र 10 वर्ष थी अतः मराठों ने शम्भाजी को राजा मान लिया। शिवाजी महाराज के निधन के बाद औरंगजेब अपनी 5 लाख सेना लेकर दक्षिण भारत जीतने निकला। राजा शम्भाजी के नेतृत्व में मराठाओं ने 9 साल युद्ध करते हुये अपनी स्वतन्त्रता बरकरार रखी। औरंगजेब के पुत्र शहजादा अकबर ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया। संभाजी ने उसको अपने यहां शरण दी। औरंगजेब ने अब फिर जोरदार तरीके से शम्भाजी के खिलाफ आक्रमण करना शुरू किया। उसने अन्ततः 1689 में शम्भाजी के बीवी के सगे भाई याने गणोजी शिर्के की मुखबिरी से शम्भाजी को बन्दी बना लिया। औरंगजेब ने भीषण यातनाएं देकर शम्भाजी को मार दिया। शम्भाजी के साथ औरंगजेब द्वारा की गई बदसलूकी और नृशंसता को देखकर पूरा मराठा स्वराज्य क्रोधित हुआ। उन्होंने अपनी पूरी ताकत से राजाराम के नेतृत्व में मुगलों से संघर्ष जारी रखा। 1700 ईस्वी में राजाराम की मृत्यु हो गई। उसके बाद राजाराम की पत्नी ताराबाई 4 वर्षीय पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षिका बनकर राज करती रही।

धार्मिक नीति

शिवाजी एक धर्मपरायण हिन्दू शासक थे तथा अन्य धर्मों के प्रति भी सम्मान रखते थे। उनके साम्राज्य में मुसलमानों को धार्मिक स्वतंत्रता थी। उन्होंने कई मस्जिदों के निर्माण में अनुदान दिया। वे हिन्दू पण्डितों की तरह मुस्लिम सन्तों और फकीरों का भी सम्मान करते थे। उनकी सेना में मुसलमान भी थे। शिवाजी हिन्दू संस्कृति को बढ़ावा देते थे। पारम्परिक हिन्दू मूल्यों तथा शिक्षा पर बल दिया जाता था। अपने अभियानों का आरम्भ वे प्रायः दशहरा के अवसर पर करते थे।

चरित्र

शिवाजी महाराज को स्वराज की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली। एक बार बीजापुर के सुल्तान ने शाहजी राजे को बन्दी बना लिया तब एक आदर्श पुत्र की तरह उन्होंने बीजापुर के शाह से सन्धि कर शाहजी राजे को छुड़वा लिया। शिवाजी महाराज ने अपने पिता के जीवित रहते हुए ही उनसे स्वतंत्र होकर बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया था। लेकिन उन्होंने अपने पिता के जीवित रहते अपना राज्याभिषेक नहीं करवाया। वह एक अच्छे सेनानायक के साथ एक अच्छे कूटनीतिज्ञ भी थे। कई जगहों पर उन्होंने सीधे युद्ध लड़ने की बजाय कूटनीति से काम लिया था। उनकी कूटनीति हर बार बड़े से बड़े शत्रु को मात देने में उनका साथ देती रही।

शिवाजी का न्याय

बात उस समय की है जब शिवाजी की उम्र मात्र 14 साल थी। एक गांव के मुखिया ने एक विधवा की इज्जत लूट ली। सैनिक उस मुखिया को पकड़ कर शिवाजी के पास लाए। मुखिया बड़ा ही रसूखदार व्यक्ति था, लेकिन उस पर आरोप साबित हो चुका था। शिवाजी निडर और न्यायप्रिय होने के साथ–साथ महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव भी रखते थे। उन्होंने निर्णय सुनाया कि इसके दोनों हाथ और पैर काट दो, ऐसे जघन्य अपराध के लिए इससे कम कोई सजा नहीं हो सकती।

शिवाजी का साहस

पुणे के करीब नचनी गांव में एक भयानक नर भक्षी चीते का आतंक छाया हुआ था। उसने गांव के कई लोगों को मार डाला था। आतंकित गांव वाले अपनी समस्या लेकर शिवाजी के पास पहुंचे। शिवाजी अपने सिपाहियों यसजी और कुछ सैनिकों के साथ जंगल में चीते को मारने के लिए निकल पड़े। बहुत ढूंढने के बाद जैसे ही चीता सामने आया शिवाजी और यसजी चीते पर टूट पड़े और उसे मार गिराया।

डॉ. अशोक आर्य
(अध्यक्ष)
सत्यार्थ प्रकाश न्यास

सत्य के प्रकाश महर्षि दयानंद

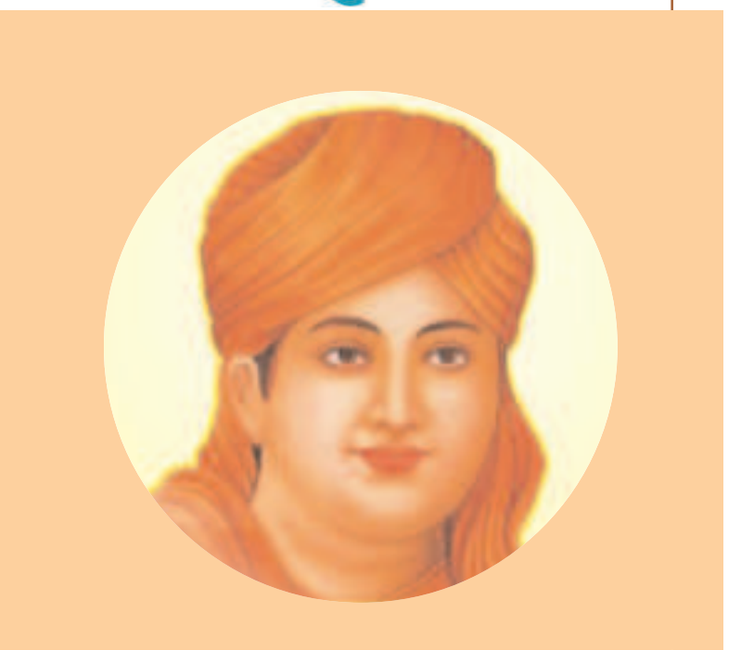

महर्षि दयानन्द का जन्म सन् 1825 में गुजरात राज्य के राजकोट जिला स्थित एक छोटे से गांव टंकारा में करसन तिवारी के यहां हुआ। जिस समय स्वामी दयानन्द का जन्म हुआ उस समय नाना प्रकार की कुरीतियां हमारे समाज में फैल चुकी थीं, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह एवं छुआछूत आदि। आगे चलकर इस बालक ने इन कुप्रथाओं को दूर करने का प्राणप्रण से प्रयत्न किया और सफलता भी प्राप्त की। इस बालक का नाम मूलशंकर रखा गया। मूलशंकर के पिता करसन तिवारी समृद्ध राजपुरुष थे। औदिच्य ब्राह्मण थे और शिव के परम भक्त थे। अतः इनके परिवार में वही वातावरण था।

पांच वर्ष की आयु में इनका यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया। शिव की पूजा जिस तल्लीनता के साथ पिता करते थे, उसे मूलशंकर सदैव देखते थे, अतः उनके मन में भी प्रबल भक्ति भाव जाग्रत हो गए थे।

जब उनकी आयु 14 वर्ष की थी। शिवरात्रि के दिन शिव मंदिर में बड़ी भव्यता के साथ इस पर्व को मनाया जा रहा था। मूलशंकर ने पिता के साथ उस दिन व्रत रखा और मंदिर में पहुंचकर एक आसन पर डटकर बैठ गए। धीरे–धीरे सब लोग सो गए। यहां तक कि पिता और पुजारी भी सो गए। परन्तु शिव दर्शन की इच्छा लिए हुए मूलशंकर जागते रहे। इतने में ही इन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा कि कुछ चूहे आकर शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद भक्षण के साथ साथ उधम मचाने लगे। मूलशंकर ने सोचा कि अब इन चूहों की खैर नहीं। अब महापराक्रमी शिव इन्हें दण्ड देंगे। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। अब शिव की शक्तिमत्ता को लेकर बालक के मन में अनेक शंकाएं जन्म लेने लगीं। उन्होंने पिता को जगाया और पूछा कि आप सभी कहते हैं कि शिव अत्यन्त पराक्रमी हैं, परन्तु वे तो इन क्षुद्र जीवों को भी दण्ड देने में असमर्थ हैं, ऐसा क्यों? पिता इसके अतिरिक्त कुछ न कह पाये कि सच्चे शिव तो कैलाश पर रहते हैं, ये तो उनका प्रतीक मात्र है। मूलशंकर के मन में तभी यह बात दृढ़ता से जम गई कि इन प्रतीकों की पूजा करना व्यर्थ है, पाना ही है तो सच्चे शिव को पाने का प्रयास करना चाहिए। वे उसी समय घर लौट आये और व्रत को समाप्त कर सो गए।

मूर्ति पूजा की निःसारता में उसी क्षण से उनको निश्चय हो गया था। आगे चलकर दो घटनाएं जल्दी–जल्दी उनके परिवार में ऐसी घटीं कि उनके मन में वैराग्य का स्फुरण हो गया उनकी सगी छोटी बहिन की मृत्यु हो गई उसके पश्चात उनके चाचा की मृत्यु हुई। मूलशंकर विचारमग्न हो गए कि ये मृत्यु क्या है। सबको क्यों मरना पड़ता है। मैं मृत्यु पर विजय प्राप्त करूंगा। धन वैभव सब कुछ मृत्यु को रोक पाने में समर्थ नहीं है तो फिर इस सबका कोई

सच्चे गुरु की तलाश में अन्ततोगत्वा 1860 में व्याकरण के सूर्य, मथुरा में निवास कर रहे प्रज्ञा चक्षु दण्डी विरजानन्द के यहां स्वामी दयानन्द पहुंचे। द्वार खटखटाया।

महत्व नहीं है। मैं उस मार्ग को ढूंढूंगा जिस पर चलकर अमर हो सकूं।

अब मूलशंकर के मन में धीरे–धीरे वैराग्य प्रबल होने लगा। उनकी ऐसी दशा को देखकर मां–बाप ने उनका विवाह करना उचित समझा। जब विवाह की तैयारियां जोर से चलने लगी तो मूलशंकर ने गृह त्याग कर दिया।

सच्चे गुरु, सच्चे ज्ञान, सच्चे ईश्वर की तलाश में दयानन्द कहां–कहां नहीं गए और क्या–क्या कष्ट नहीं झेले। एक बार सब तरफ के रास्ते पर्वतों की श्रेणियों से बन्द मिले। तो पहाड़ी बर्फीली नदी अलखनन्दा को पार करने का निश्चय किया। सारा शरीर लहूलुहान हो गया और पार करते ही लगभग अचेतावस्था में दयानन्द गिर पड़े। दो पुरुष कहीं से आये और उन्होंने सहायता के लिए प्रस्ताव किया, परन्तु दयानन्द ने विनम्रता से मना कर दिया। दयानन्द तो सत्य के प्रबल आग्रही थे।

सच्चे गुरु की तलाश में अन्ततोगत्वा 1860 में व्याकरण के सूर्य, मथुरा में निवास कर रहे प्रज्ञा चक्षु दण्डी विरजानन्द के यहां स्वामी दयानन्द पहुंचे। द्वार खटखटाया। गुरु ने पूछा कि कौन है? दयानन्द बोले, भगवन् यही तो जानने मैं यहां आया हूं कि मैं कौन हूं? बस सच्चे गुरु को सच्चा शिष्य एवं सच्चे शिष्य केा सच्चा गुरु मिल गया।

लगभग अढ़ाई वर्ष तक विरजानन्द के चरणों में बैठकर दयानन्द ने आर्ष ज्ञान की कुंजी प्राप्त कर ली। संन्यासी होते हुए भी सदैव अन्य शिष्यों की भांति वे भी गुरु सेवा करते थे।

गुरु दक्षिणा का समय भी आ गया। अब गुरु से विदा लेनी थी। संकोच था कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। गुरु को क्या अर्पण करूंगा। कहीं से लौंग मांगकर लाये और गुरु से विदा मांग ली, दण्डी जी ने कहा कि दयानन्द मैं तुमसे इतनी तुच्छ दक्षिणा नहीं चाहता। मैं तो चाहता हूं

कि तुम अपना जीवन आर्य जाति के उत्थान के लिए समर्पित कर दो। इस देश को अपने खोए हुए गौरव तक ले जाने में पूर्ण प्रयास करो। दयानन्द ने गुरु की आज्ञा को स्वीकार किया और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी उद्देश्य को लेकर समर्पित कर दिया ।

स्वामी जी ने अपने जीवन में सत्य की स्थापना के लिए अहर्निश पुरुषार्थ किया स्वार्थी मतान्ध विरोधियों की गालियां ही नहीं प्राणघातक वार भी सहे पर अपने कर्तव्य से यत्किन्च भी पीछे न हटे। स्वामी जी ने अपने जीवन का अंतिम भाग राजस्थान के राजाओं को सुधारने में लगाया, क्योंकि उनकी सोच थी कि 'यथा राजा तथा प्रजा', अतः उनका मानना था कि यदि राजाओं में सुधार

इसी नवलखा महल में प्रवास करते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रणयन सम्पूर्ण किया था।

हो जाए तो प्रजा अपने आप सुधर जायेगी। इसी भावना के अंतर्गत उन्होंने मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जन सिंह का उदयपुर आने का अनुरोध स्वीकार किया और वे 10 अगस्त 1882 से 27 अगस्त 1883 तक उदयपुर स्थित नवलखा महल में विराजे। महाराणा सज्जनसिंह रोजाना दो बार ऋषि के चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण करने आते थे। एक बार एकान्त में महाराणा ने स्वामीजी को कहा कि हम तो एकलिंगजी के दीवान हैं, ये सारी सम्पत्ति राज्य वैभव उनके अधीन है, अगर आप केवल मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें तो आपको इस गद्दी का अधिष्ठाता बना दिया जायेगा और आपके वेद भाष्य आदि कार्यों के लिए प्रचुर राशि आपको प्राप्त हो जायेगी। स्वामीजी ने महाराणा को कहा कि राजन् तुम्हारे राज्य की सीमा को तो मैं दौड़ लगाकर पार कर सकता हूं पर ईश्वर के साम्राज्य के बाहर किस प्रकार जा पाऊंगा। इसलिए ईश्वर की आज्ञा मानना मुझे अनिवार्य है और ईश्वर की आज्ञा है कि वह निराकार है उसकी कोई प्रतिमा नहीं बनाई जा सकती। जब प्रतिमा नहीं बनाई जा सकती तो पूजने का सवाल ही कहां पैदा होता है।

इसी नवलखा महल में प्रवास करते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। जैसा हमने कहा कि स्वामी जी योग में निष्णात थे तो अनेक योगज सिद्धियां प्राप्त होना उनके लिए स्वाभाविक थीं। परन्तु वे कभी इस बारे में जनसामान्य में न चर्चा करते थे, न उन्हें दिखाते थे। परन्तु एक बार जब नलवखा महल के निकट एक जलाशय में स्वामीजी पानी की सतह पर ही अपने योगबल से पद्मासन लगाकर बैठे थे तो नवदीक्षित संन्यासी सहजानन्द को उन्हें इस मुद्रा में देखने का सौभाग्य अनायास प्राप्त हो गया और यह घटना लोगों को सामने आ गई। स्वामीजी ने अपनी उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा का गठन भी उदयपुर में ही किया और यही पर उसका पंजीकरण करवाया।

28 मार्च 1883 के दिन महर्षि ने उदयपुर से विदा ली

और वे शाहपुरा पहुंचे। यहां के महाराज नाहर सिंह स्वामी जी के परमभक्त थे। शाहपुरा में अनेक सुधार के कार्य स्वामीजी के निर्देश से नाहर सिंह ने करवाये।

महाराज शाहपुरा से जोधपुर पहुंचे। जब वे जोधपुर जा रहे थे तो अनेक लोगों ने कहा कि वहां न जायें वहां के लोग

अर्द्धरात्रि में स्वामीजी की तबीयत जब अत्यन्त खराब हुई तो उन्हें सम्पूर्ण षड्यंत्र का ज्ञान हुआ। रसोइये को बुलाकर कहा कि तुमने यह ठीक नहीं किया, अभी बहुत सारा कार्य शेष था।

शुष्क हैं आप सत्य कहने से चूकते नहीं वहां आपके प्राणों को खतरा हो सकता है तो स्वामी जी ने कहा कि चाहे मेरी अंगुलियों की बत्तियां बनाकर जला दी जायें तो भी मैं सत्य बोलने से पीछे नहीं हट सकता और वे जोधपुर पहुंचे और वहां फैजुल्ला खान की कोठी में प्रवास किया।

एक दिन जब स्वामी दयानन्द जोधपुर नरेश के यहां पहुंचे तो स्वामी जी के आने की खबर सुनते ही महाराजा ने वहां उपस्थित नन्हीं वैश्या को शीघ्रता से विदा किया और इस क्रम में उसकी पालकी को स्वयं ही उठा लिया यह दृश्य देखकर स्वामीजी स्तब्ध रह गए। उन्होंने कहा कि राजन् तुम सिंह के समान हो, एक कुतिया को यह सम्मान देना आपको शोभा नहीं देता और आपको ऐसे विषय प्रसंगों से दूर रहना चाहिए। यह सुनना था कि नन्हीं भक्तन ने स्वामीजी के प्रति विरोध की गांठ बांध ली। आगे चलकर ये अन्य षड्यंत्रकारियों से मिल गई और स्वामीजी के रसोइये को प्रलोभन देकर 29 सितम्बर 1883 को दूध में विष मिलाकर पाचक द्वारा स्वामीजी को दिलवा दिया।

अर्द्धरात्रि में स्वामीजी की तबीयत जब अत्यन्त खराब हुई तो उन्हें सम्पूर्ण षड्यंत्र का ज्ञान हुआ। रसोइये को बुलाकर कहा कि तुमने यह ठीक नहीं किया, अभी बहुत सारा कार्य शेष था। जैसी प्रभु की इच्छा और उसे रुपये देकर वहां से भाग जाने को कहा और कहा कि ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे प्राणों पर संकट आ जायेगा। धन्य है ऐसी दयालुता जो विषदाता को भी माफ कर सके।

स्वामीजी की तबीयत बिगड़ती जा रही थी। अलीमर्दान खां नाम के चिकित्सक ने इलाज किया परन्तु यह भी षड्यंत्रकारी था दवा के बहाने और विष देता गया और स्वामी जी की तबीयत में बिगाड़ होता चला गया।

अन्ततः आबू पर्वत होते हुए स्वामी जी अजमेर पहुंचे, वहां भिनाय कोठी में स्वामीजी की व्यवस्था की गई। उपलब्ध चिकित्सक बुलाये गये पर कोई सुधार नहीं हुआ। लोग

आश्चर्य कर रहे थे कि शरीर पर फफोले निकल रहे थे, पीड़ा होनी चाहिए, परन्तु दयानन्द के चेहरे पर ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं हो रहा था। पंडित गुरुदत्त स्वामीजी के हालचाल जानने आये थे। बड़े ही विद्वान् पुरुष थे परन्तु अभी तक ईश्वर में विश्वास नहीं हो पाया था।

दीपावली का दिन था। सायंकाल का समय था। स्वामीजी ने सारी खिड़कियां खुलवा दीं, सब उपस्थित लोगों को अपने पीछे आने को कहा, समाधिस्थ होकर ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर प्राण त्याग दिए। इस अद्भुत दृश्य को देखकर गुरुदत्त परम आस्तिक हो गए। दीपावली के दिन आर्यावर्त का सूर्य हमेशा के लिए विदा होकर अस्ताचल की ओर चला गया। परन्तु, एक स्पष्ट दिशा दे गया, जिस पर चलकर अनगिनत लोगों ने अपने जीवन को नवीन अर्थ दिए और आज भी उनके उपदेश संसार को उन्नत मार्ग पर ले जाने के लिए अपना कार्य कर रहे हैं।

गुझिया

नीता हर्ष

सामग्री

मैदा, घी, मावा,
नारियल का बुरादा
बादाम, पिस्ता, काजू, खजूर, किशमिश
मिश्री के छोटे दाने
जायफल जावित्री इलायची और दालचीनी पाउडर

बनाने की विधि

एक कडाही में थोड़ा सा घी लेकर मावे को सेक लें। अब इसमें नारियल का बुरादा, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिश तथा खजूर के छोटे छोटे टुकड़े करके मिला लें। मिश्रण के ठंडा हो जाने पर इसमें जायफल जावित्री इलायची और दालचीनी पाउडर और मिश्री के छोटे दाने मिला लें।

मैदे में थोड़ा मोयन मिला कर गुनगुने पानी से गूंध लें। पूरी के आकार में बेल कर इसमें मिश्रण को बीच में रखें। उसे गुझिया का आकार दें।

कड़ाही में घी गरम करके गुझिया को तल लें।

मावे की मीठी कचौड़ी

नीता हर्ष

सामग्री

250 ग्राम मैदा, 100 ग्राम पिसी चीनी
150 ग्राम मावा, 250 ग्राम चीनी
250 ग्राम देसी घी
जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, केसर,
बादाम और पिस्ता

बनाने की विधि

सबसे सबसे पहले मैदे में लगभग 40 ग्राम देसी घी का मोयन डाल कर अच्छी तरह से मिला लें। गुनगुने पानी डाल कर गूंध लें। अब इसे कुछ समय के लिए कपड़े से ढक कर रख दें।

भरावन : अब एक कड़ाही में थोड़ा सा घी डाल कर मावे को सेक लें। इसमें पिसी हुई चीनी बादाम और पिस्ता मिला लें। इलायची जायफल और जावित्री का चुटकी भर पाउडर इस मिश्रण में मिला लें।

चाशनी : एक कड़ाही में चीनी लें उसमें थोड़ा सा पानी डाल कर उबालें। एक तार की चाशनी बना लें। केसर को पानी में घोल कर चाशनी में मिलाएं।

कचौड़ियां : मैदे के छोटे छोटे लोए बना लें। उसी आकार के भरावन के लोए बनाएं। भरावन को लोए के बीच में डाल कर कचोरी का आकार दे दें। कड़ाही में घी गरम कर कचोरियों को पहले धीमी आंच पर और फिर मद्धम आंच पर सुनहरा होने तक तलें। कचौड़ी के बीच में छेद करके उसमें चाशनी डाल कर परोसें।

पूरन पोली

नीता हर्ष

सामग्री

चनादाल
मैदा
गुड
घी
इलायची पाउडर

पूरन पोली महाराष्ट्र का सबसे लोकप्रिय व्यंजन है। इसे बनाना बहुत आसान है। होली के समय महाराष्ट्र के लगभग सभी घरों में पूरन पोली बनाई जाती है।

बनाने की विधि

रात भर भीगी हुई चना दाल को कुकर में मद्धम आंच पर तीन चार सीटी बजने तक पकाएं। फिर दाल को ठंडा होने के लिए रख दें।

मैदे में मोयन मिला कर गुनगुने पानी से गूंध लें।

कड़ाही में दो बड़े चम्मच घी डाल कर दाल को गुड़ के साथ सेक लें। गुड़ और दाल का मिश्रण जब गाढ़ा हो जाय तो उसे गैस से उतार लें। मिश्रण को ठंडा होने के लिए रख दें।

गूंधे हुए मैदे की छोटी छोटी लोइया बना लें। इन लोइयों में दाल और गुड का मिश्रण भर कर पूरी की तरह बेल लें।

अब इसे तवे पर अच्छे से सेक लें।

पूरन पोली तैयार है।

सुनीता माहेश्वरी
(संकलन)
राजस्थान

कल तो तुझे फांसी होनी ही है...

बहुत पुरानी बात है। एक गांव में एक पंडित जी रहते थे। उनके एक बेटा था। पढ़ाई लिखाई में उसका मन लगता नहीं था। मां पाठशाला के लिए भेजती वह पाठशाला जाने के बजाय इधर उधर मटर गश्ती करता रहता था। एक दिन वह पाठशाला जाने के बजाय अपने घर की छत पर जा कर छिप गया। छत पर से उसने अपनी मां को खाना बनाते देख लिया। पाठशाला से लौटने का समय होने पर वह मां के सामने आ गया और बताने लगा कि खाने में क्या और कितना बनाया है। मां को लगा कि उसका बेटा बड़ा ज्ञानी ज्योतिषी हो गया है। मां ने बेटे के ज्योतिषी हो जाने की बात पूरे गांव में फैला दी।

संयोग की बात थी की राजा के महल से एक हार चोरी हो गया। बहुत प्रयास करने पर भी हार का पता नहीं चला। किसी ने राजा को पंडित के पुत्र के बारे में बताया। राजा ने पंडित के पुत्र को बुलवाया। और कहा कि अपनी ज्योतिष विद्या से यह पता लगाओ कि हार किसने चुराया। यदि तुम्हारी बात सही निकली तो तुम्हें आधा राज्य दे कर राजकुमारी का विवाह तुम्हारे साथ कर दिया जाएगा, अगर बात गलत निकली तो तुम्हें मृत्यु दंड दिया जाएगा। इसके लिए तुम्हें एक दिन का समय दिया जाता है। एक दिन के लिए पंडित के पुत्र के निवास की व्यवस्था राजा के महल में ही कर दी गई।

राजा का आदेश सुनने के बाद पंडित जी के पुत्र की हालत खराब हो गई। उसे रात में नींद आ रही थी। बहुत देर तक नींद नहीं आने के बाद उसने खुद से ही कहा आज आज तो सो ले, कल तो तुझे फांसी होनी ही है। यह बात वहां खड़े प्रहरी ने सुन ली। वह भय से थर थर कांपने लगा। दरअसल हार उस प्रहरी ने ही चुराया था। उसे लगा कि उसका राज खुल गया है। वह हार लेकर पंडित के पुत्र के पास पहुंच गया।

हार मिल जाने के बाद राजा ने का आधा राज्य पंडित के पुत्र को दे दिया और राजकुमारी के साथ उसकी शादी कर दी।

With best Compliments From :

Dr (Prof.) Bithal Das Mundhra
Chairman

BHARATIYA VIDYA MANDIR

Institute for:
Advancement of Learning
Literature, Language, Culture,
History, Science, Archeology
Engineering and Folk Art

Simplex Infrastructures Limited

Regd. Office : 'Simplex House' 27, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 017, India
Phone : (033) 2301-1600 • E-mail : simplexkolkata@simplexinfra.com
Fax : (033) 2283-5964/65/66 • Website : www.simplexinfrastructures.com

Admn. Office : 12/1, Nellie Sengupta Sarani, Kolkata - 700 087, India
Phone : 2252-0923/0924/3794/7596/8371/8373/8374/9372

SERVING THE NATION SINCE 1924 YEARS

Branches

New Delhi :
HEMKUNTH (4th Floor)
89, Nehru Place, New Delhi - 110 019
Ph : (011) 4944-4200/4300/4932-1400
Fax : (011) 2646-2788/5869, 2622-7982
E-mail : simplexdelhi@simplexinfra.com

Mumbai :
502-A, Poonam Chambers,
Shivsagar Estate, Dr. Annie Besant Road,
'Worli' Mumbai - 400 018
Ph : (022) 62466666/24912755/24913481
Fax : (022) 2491-2735
E-mail : simplexmumbai@simplexinfra.com

Chennai :
New No. 48 (Old No. 21), Casa Major Road
'Egmore', Chennai - 600 008
Ph : (044) 2819-5050 (5 Lines)
Fax : (044) 2819-5056/57
E-mail : simplexchennai@simplexinfra.com